

॥ॐ नमः॥ कृत्वा नारायणं श्राद्धं ब्रह्मगन्तव्यं
विश्वगन्तव्यं स्वाहा॥ इति ब्रह्मगन्तव्यं स्वाहा॥ ॐ स्वाहा नमः॥ ॥
हृदयार्थिनाय नमः कृत्वा नारायणं श्राद्धं ब्रह्मगन्तव्यं स्वाहा॥ इति ब्रह्मगन्तव्यं स्वाहा॥ ॐ स्वाहा नमः॥ ॥
॥ॐ स्वाहा नमः॥ ॥

११२ नारायणं ब्रह्मगन्तव्यं स्वाहा

ॐ नमो नाथेश्वराय ॥ नृत्यानम विधानपत्रिपाटिलिखन ॥ न
कसनाद्यश्वेनयुजायाय ॥ मङ्गला (थी) ॥ नमः सुखलुमलुलाकावति
गुप्तमनसि ॥ न्यास ॥ नमः ॐ ह्रीं क्रीं ॥ अम्नाय रुद्र ॥ कवसाधन ॥
नमः ॐ ह्रीं क्रीं दद्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्रीं निवसस्व ॥ ॐ ह्रीं क्रीं निवसस्व
॥ ॐ ह्रीं क्रीं कवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं क्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं क्रीं अम्नाय रुद्र
॥ कवसाधन ॥ मूलवृत्त (मिनाय पाय पूजन ॥ आवाहनादि (ध
नेयानिमूया ॥ ॥ नमः ॐ ह्रीं क्रीं आधाय ॥ ह्रीं लिंग ॥ ह्रीं नालि ॥ ह्रीं दधि ॥

ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ललाट ॥ ॥ ह्रीं क्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं क्रीं लमहानृ
ह्येश्वराय महारुचवाय आत्मन नमः ॥ चन्दनादि रुचणी ॥ माल
नीप (०७) ॥ स्वस्वमकुली पंचवलि पूजन ॥ साधन ॥ ताम्रलादि ॥
गगायवाचन ॥ निर्मल ॥ अम्नाय ॥ स्नान पंचामृतन ॥ मूलमकुली ॥
अलिस्नान ॥ चन्दनसिंदूरद्विज्जुक्तापवीतमालापूषनेवद्यरुलादि
उपहार ॥ ॥ गगन पूजन ॥ नमः ॐ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥
ह्रीं क्रीं ॥ नमः ॐ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥ ह्रीं क्रीं ॥

गणपतयवलिगृह २ साहा ॥ जंउं डं दूं यां या निनीवलिगृह २
साहा ॥ जंउं डं दूं सववि विरुग सासर्वरुगसावलिगृह २००
॥ लेखवलि विरु ॥ जंउं डं दूं नदिननमः ॥ दक्ष ॥ जंउं डं दूं मरुका
लायनमः ॥ वाम ॥ जंउं डं दूं गणपतयनमः ॥ दक्ष ॥ जंउं डं दूं वपु
कायपौनमः ॥ वाम ॥ जंउं डं दूं आधवगकाय २ ॥ जंउं डं दूं अन
नासनाय २ ॥ डं दूं स्कं दाय २ ॥ डं दूं नालाय २ ॥ डं दूं पद्माय २ ॥
डं दूं गाय २ ॥ डं दूं कंगाय २ ॥ डं दूं कर्तुकाय २ ॥ डं दूं पद्मास

नाय २ ॥ डं दूं पुतासनाय २ ॥ डं दूं वृषासनाय २ ॥ डं दूं नृपेश्वरा
सनायनमः ॥ डं दूं धर्माय २ ॥ आर्य ॥ डं दूं कानाय २ ॥ नैमर्य ॥
डं दूं वेवा आयनमः ॥ वायव्य ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥ शीतन ॥ डं दूं
अधर्माय २ ॥ पूर्व ॥ डं दूं अरुनाय २ ॥ दक्षिण ॥ डं दूं अवेवाकाय
२ ॥ पश्चिम ॥ डं दूं अनेश्वर्याय २ ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥
नै ॥ डं दूं वामाय २ ॥ डं दूं दक्षायनमः ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥ डं दूं नैमर्याय २ ॥
ली २ ॥ डं दूं कलविकलुयि २ ॥ डं दूं वलविकलुयिनमः ॥ डं दूं

दक्षिणवक्त्राय २ ॥ उँ दूँ गत्युन्वाय पूर्ववक्त्राय २ ॥ उँ दूँ ॐ शिना
यडवक्त्राय २ ॥ ॐ निवक्त्राय ॥ ॥ गतामध्ययुजनी ॥ उँ दूँ गं
वाँ ग किनीया गिनी ह हु क रे नवयुगी पाई काँ ॥ उँ दूँ वाँ काँ न
किनीया गिनी विपुना न क युगी पापू ॥ उँ दूँ ला काला किनीया गि
नी अग्निवगावरे नवयुगी पापू ॥ उँ दूँ का सा का किनीया गिनी अ
ग्नि जिह्वे नवयुगी पापू ॥ उँ दूँ सा का सा किनीया गिनी काला ख
रे नवयुगी पापू ॥ उँ दूँ हा का हा किनीया गिनी क बाला हरे नव

युगी पापू ॥ उँ दूँ याँ काया किनीया गिनी न पादरे नवयुगी पा
पू ॥ उँ दूँ काँ कारीसनया गिनी रिमरूपरे नवयुगी पापू ॥ ॐ
पूर्वादी शिनानं ॥ पून ४ युजनी ॥ उँ दूँ चन्द्रमधुलाय २ ॥ उँ दूँ सूर्य
मधुलाय २ ॥ अग्निमधुलाय २ ॥ मध्य ॥ गतावदयुजा ॥ उँ दूँ म
धवाय २ ॥ उँ दूँ यशस्वदाय २ ॥ उँ दूँ सामवदाय २ ॥ उँ दूँ अथ
ववदाय २ ॥ वदपूर्वाहनी ॥ उँ दूँ कनयुगाय २ ॥ अथायुगाय २ ॥
उँ दूँ वापयुगाय २ ॥ उँ दूँ कलियुगाय २ ॥ युग अग्र (नयादि ॐ

नान्क॥ॐ हूं भूवकाय॥२॥ॐ हूं कौं असिगात्रे नवाय॥ॐ
 हूं कैं कीमरुधनी ॥ॐ हूं कौं नूरु नवाय॥ॐ हूं वें श्रीकोमानी
 ॥ॐ हूं कौं वल्लु नवाय॥ॐ हूं कीटवेव्वी॥ॐ हूं कौकाध
 नवाय॥ॐ हूं लीनवागरी॥ॐ हूं कौंडमरु नवाय॥
 ॐ हूं कीपं न्याय॥ॐ हूं कौकपाली नवाय॥ॐ हूं कौ
 यं वामुधय॥ॐ हूं कौरीवध नवाय॥ॐ हूं काकीधीमं
 मरुलक्ष्मी॥ॐ हूं कौं संहार नवाय॥पूर्वादि॥न॥

॥ ॐ हूं वें अरुं मरुनृत्तध्वरे नवाय नृत्तलक्ष्मी सरिता
 यनम॥ ॥ मूलयुग्ममध्या॥ वाङ्मलकपालपूजन॥ॐ
 हूं लूं न्याय॥ॐ हूं नूं अग्रय॥ॐ हूं मूं यमाय॥ॐ हूं कूं न
 म्नाय॥ॐ हूं वूं वरुधाय॥ॐ हूं पूं वायव॥ॐ हूं हूं व
 नाय॥ॐ हूं हूं नृगनाय॥ॐ हूं अर्धाय॥ॐ हूं उंडुधाय॥
 पूर्वादि॥ नान्क॥ॐ हूं कलिकादिनक्षत्रा॥२॥२८॥ आवारुना
 दि॥ वलिनवय॥ नृति व लिपूजा॥ ॥ धनधूनकाववरि॥८॥

ॐ कं क नृ ध नृ य म ह रं नृ वा य क्क न ग कि स हि गाय अ व त न २ ह्वा हा ॥ ३

लक्ष्मीपूजा॥ नवनाटक ४॥ ॐ ह्रीं सैश्वर्या न नृपमहारे नवायज्ज
ध्वनं शक्ति सहिताय ज्वतन ज्वतन ज्वतन स्वाहा॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नृप
महारे नवायधर्म शक्ति सहिताय ज्वतन २ स्वाहा॥ २ ॥ ॐ ह्रीं
कंकोधनृपमहारे नवायवेना शक्ति सहिताय ज्वतन २ स्वा
हा॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं हंसाय नृपमहारे नवाय शैश्वर्य शक्ति सहिताय
ज्वतन २ स्वाहा॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं हंसाय नृपमहारे नवाय ज्ञान शक्ति
सहिताय ज्वतन २ स्वाहा॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं वंदारुद्राय नृपमहारे न

वायुधर्मशिकिसहितायजुवतन २ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ हूं वं नो द
वृषमहारेववायुं धर्मशिकिसहितायजुवतन २ स्वाहा ॥ ८ ॥
ॐ हूं सं सोमवृषमहारेववायुधर्मशिकिसहितायजुवतन २ ॥
॥ ९ ॥ श्वेतधनुर्लिङ्गावकलेशपूजायाय ॥ पूर्वादिनढायकं ॥
ॐ हूं कांक्षदयायत्यादिषष्ठजनपूजा ॥ ॥ ॐ हूं कांक्षपूजा
यवलिंगुद २ ॥ ॐ हूं वां वदूकायवलिंगुद २ स्वाहा ॥ ॐ हूं गर्ग
पतयवलिंगुद २ स्वाहा ॥ ॐ हूं सां सर्वयानिनीयावलिंगुद २

साहा॥ उँ दूँ सर्व विधि कृते शा सर्व ह्यथा वलि गृह २ साहा॥
 उँ दूँ नृत्त ध्वज महारु नवाय सर्व विधि रुवाय नृत्त सिद्धि क
 न ॥ यद्वं वलि गृह २ ख २ खादि दूँ रुद्र साहा॥ नृत्त ध्वज वलि॥
 मूल मनु ६१ उँ दूँ वा दूँ नृत्त मृदा द गये ॥ सु॥ यं॥ उँ दूँ का धा
 धम मना रुवा ध्वज विपुत्रा ग कि प उँ दूँ ध्वज रुद्र कर्म रुद्र ज
 ग दि र्द ला वसा निर्मिती ध्याना ग कि नि वन विधी या ग म चि
 र्द सिद्धि दं काला ग म कूल ना स का विजय ते नृत्त ध्वज रुद्र व ४॥ धृ

३३
 अत्र च वीर्य सक नृत्त मृदा ध्या का ध्वज रुद्रा सा ति र्द मं वी रुद्र संप्र
 द ग म कं न व न स विजया नृत्त मानी द रुद्रा वी सिद्धा या वा रुद्र न रुद्र
 नृत्त निवद्र विधं ता धुं रुद्र नाथ सायं वि॥ ध्वज रुद्र व विपुत्र विपु
 रुद्र नो मि नृत्त ध्वज ग ४॥ रुद्र कर्पू न का कि हि म क व कि न धी न क
 व कं विन प्र उँ दूँ नृत्त ति रुद्र म नृत्त क स हि र्द मूल पा वि स ॥ ग म र्द
 वि द धुं वा ध च कं क न गि ज प ध र्द म च रुद्र ति धू र्द वाम श्रुद्ध नि
 रुद्र नृत्त ति धु रुद्र क र्द रुद्र म द श्रु प र्द ॥ याल ग म धु व द ध ४॥ अलि

वसहयुगैस्वर्णमामु लंवानागैर्ध्वयस्त्रपवीगैर्जहिकूलरुवर्ण
 नुमुमालासिहर्षं। जठामकृमिशुभ्रिगैर्निनुसिगैर्निध्वं४
 याध्ववर्मकटिहंस्त्रिवावाहनसंष्टकृतिकृतिलक४गाधुवाह
 गताथं॥ निर्विघ्नं तात्पर्यं नववसलयगा सिद्धिसर्वाथरावसा
 यं विघ्नं प्रायं विपूवविपूवर्नृत्तवापिनर्दं। सर्वेषां चैव ध
 किं सगैपविजनात् कथं सर्वेषां लार्थे नाथ नोदं सजयति
 जयता नृत्तवाथं तमस्तु॥ ॐ नमोस्तुत्वापदमा॥

अथ नृत्तपविपातिविधानं॥ आदिसनाटध्वनयूजानयाय॥
 ध्वयालिवयविविधानं॥ मधुपयकृतिलोवनश्राद्धदातम॥ चंडा
 व॥ न्यासादिजुष्टपाप्रयूजा॥ हस्तधुदिआत्मपूजा॥ ॐ हूं क४ अस्तु
 यरु॥ अर्थादिकनयाकृष्णं॥ ॐ हूं कृष्णं मन्त्रध्वनरुववायनम४
 ॥ निरीकृष्णं॥ ॐ हूं कववायहूं॥ गा भू उने॥ ॐ हूं क४ अस्तु यरु
 ट॥ लंखनहाय॥ ध्वनवकु४ सस्त्रावयायूदाव॥ अस्तु धीकृत्तियूजा
 योदाव॥ वक्रगा अस्तु मन्त्रध्वनननेकवकाव॥ यकृतिसकृत्

काठुसी चाकूपननमः ८ नंदमः ८ लक्ष्यकः ॥ धनपि निरु २
धनक वाकलंदयकः ॥ गायवानगियुवानर्थः ॥ साधवैनकः ॥
लंनपदायः ॥ ॥ चाकूपमाननचाकसिखलः ॥ धवाकसिनपि
धमयाघालकूपः ॥ चाघालः ॥ मः ८ लक्ष्यकलखवलिविः ॥ न्यासः ॥
ऊलपायः ॥ अर्घपायः ॥ पूजाः ॥ नादिः ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं ४ हूं हूं हूं हूं
लिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं वां वृ कायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं गं ग
धपगयवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं सर्वविधिगतः ४ सर्वहृत् गं ह्याव

लिगृह २ स्वाहा ॥ हृत् गवलिग्याविधानः ॥ ॐ जापः ॥ स्फार्पः ॥ धनवलि
विद्यावः ॥ अमुमनुः ६ टं विनवाशायः ॥ अग्निनः ६ ह्य वायुः ६ श्नीः ६ न
तः ६ मः ॥ धवावलिसकायावः ॥ अमुः ६ विमः ६ नयाः ६ वः ॥ धवलिवाय
कासासः ॥ ॥ धनलिः ॥ कृधं गवलिधपनयः ॥ मः ८ पयादा
नः ॥ धवलिविः ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं ४ हूं हूं हूं हूं
गृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं वां वृ वृ कनाथः ॥ वलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं गं
गी गृगधपगयवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं ४ हूं हूं हूं हूं
यः

ॐ ह्रीं रुद्रकायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विपुत्राकका
 यवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्निवतालरेववायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ
 ह्रीं अग्निजिह्वारेववायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कालाकरेववायव
 लिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कपालीगरेववायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
 एकपादरेववायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं रीमत्रपरेववायवलिगृह
 २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं हांठकरेववायवलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अवलरेव
 वायवलिगृह २ स्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ धनूमर्षादभय ॥ धनधून

आवकायस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं यन्मासनायनम ४ ॥ लूपवडाहापवत ॥ दारु
 लज्जाकगते ॥ ॐ ह्रीं रुद्रकरेववाय २ ॥ ध्वजदिन ॥ अष्टदिगपूर्वा
 दिग्गीर्णानार्क्यरुत्वाय ॥ धर्मिमाक्याय ॥ वल्लुकक्याय ॥ वक्रावि
 द्युत्रय ॥ गिनक्य ॥ मुर्तिलाकपाल ॥ लंठिनाग ॥ सा अन्नकका
 टिदव ॥ पलिवय ॥ विधानथ ॥ धलिववलि विसर्जन ॥ धलिव
 मधुपर्णविर्वा ॥ ॥ अथ ८ तया विधान ४ ॥ नकसनाट ॥
 वपूजानयाय ॥ पावनविगन अर्चयताश्वा ॥ ॥ मिसाना

मह (थ) शकाल सकावकूटम कुहा पूजन ॥ पत्रवनामह (थ) श
कावकूटम पूजन ॥ धन वि (ग) व ॥ ॥ ॐ ह्रीं नै न नदि न २ ॥
ममहाकालाय २ ॥ ॐ ह्रीं गं ग ष प त य २ ॥ ॐ ह्रीं कु मा रा य २ ॥ ॐ ह्रीं नृ
त्यमहाल धन पूजन या दव ॥ गाल ॥ सिं ॥ पूजन ॥ ॥ कल
गु पूजन ॥ ॐ ह्रीं गं ग म य २ ॥ ॐ ह्रीं ज म ना य न म ४ ॥ ॐ ह्रीं (ग) ग व ल्य २
ॐ ह्रीं स व स य २ ॥ ॐ ह्रीं नृ म द य २ ॥ ॐ ह्रीं ग ष ॥ ॐ ह्रीं को नि के २ ॥
ॐ ह्रीं हं ल क ल व क म हा स न स मा रु स क ल गी थ म रु द व ग ग ल

गवाधिय गय वक्त्र विष्णु दात्मन विशागिव ग त्वाय रु ल म हा नृ
त्य ध्व न स वा य संपूर्ण कल ग य न म ४ ॥ कां द द या दि व ठ (ज) न संपूर्ण ॥
(ध) नृ म डा ॥ ॐ गि क ल ष पू ज न ॥ ॥ अथ दि ग पू ज न ॥ ॐ ह्रीं ज नि ग
मि रं व वा य र्ज व क्त्र य षी स रि गाय न म ४ ॥ ॐ ह्रीं ॐ द्रा य २ ॥ ॐ ह्रीं न दि
न २ ॥ ॐ ह्रीं म हा काला २ ॥ न दि म हा कालो द क्क व मि ॥ ॐ ह्रीं रु ठ क रं व
वा य क य पा ला य २ ॥ म (ध) ॥ आ वा रु ना दि व लि ने व य ॥ धन पूर्व या ॥
॥ ॥ ॐ ह्रीं नृ नृ रं व वा य कं मा रु ध्व नी स रि गाय २ ॥ म (ध) ॥ ॐ ह्रीं ज

गाय २॥ उँ हूँ विजयाय २॥ दक्षवाम ॥ उँ हूँ जगन्नाथ २॥ उँ हूँ विप्रा
ककरेनवायकृष्णालाय २॥ म॥ (ध॥) आवाहनादिवलिनवश ॥ धन
आ॥ गयया ॥ ॥ उँ हूँ चतुर्नवायवँकोमावीसहिगाय २॥ म॥ (ध॥)
उँ हूँ हँ गिन २॥ दक्षि॥ (६॥) उँ हूँ गणपतय २॥ वाम ॥ उँ हूँ यमाय २॥
उँ हूँ शनिवतालरेनवकृष्णालाय २॥ म॥ (ध॥) आवाहनादिवलिन
वश ॥ धन॥ दक्षि॥ (६॥) ॥ उँ हूँ काधरेनवायटँवेव्वीसहिगाय २॥
म॥ (ध॥) उँ हूँ जिगाय २॥ दक्षि॥ (६॥) उँ हूँ जगन्नाथिगाय २॥ वाम ॥

उँ हूँ नेमलाय २॥ उँ हूँ कयरेनवकृष्णालाय २॥ म॥ (ध॥) आवाह
नादिवलिनवश ॥ धन॥ नेमलाय ॥ ॥ उँ हूँ उमरुनवायगँवावा
हीसहिगाय २॥ म॥ (ध॥) उँ हूँ वरुधाय २॥ उँ हूँ ॥ दक्ष ॥ उँ हूँ स्कंदा
य २॥ वाम ॥ उँ हूँ कालाकरेनवकृष्णालाय २॥ म॥ (ध॥) आवाहना
दिवलिनवश ॥ धन॥ पश्चिमया ॥ ॥ उँ हूँ कपालरेनवायपँ
दाहीसहिगाय २॥ म॥ (ध॥) उँ हूँ वामव २॥ उँ हूँ जगन्नाथ २॥ दक्ष ॥ उँ हूँ
स्कंदाय २॥ वाम ॥ उँ हूँ कपालीगरेनवकृष्णालाय २॥ म॥ (ध॥) आवाह

नादिवलिनेवद्य॥धनवायवया॥ ॥ उँदूँरीवदमहारेववायय
 वामुधुसहिगाय२॥म॥ध॥ उँदूँकववाय२॥ उँदूँदव्ये२॥दक॥
 उँदूँवधुय२॥वाम॥ उँदूँचकपादरववकपपालाय२॥म॥ध॥
 आवाहनादिवलिपानेवद्य॥धनउरुनया॥ ॥ उँदूँसहवरेववा
 यनमहलेश्रीसहिगाय२॥म॥ध॥ उँदूँरीभनाय२॥ उँदूँमहन्ये
 २॥ उँदूँशकव॥ध॥२॥दकवाम॥ उँदूँरीमनूपरेववकपपालाय
 २॥म॥ध॥ आवाहनादिवलिनेवद्य॥धनवृक्षनया॥ ॥ उँदूँ

चकाय२॥ उँदूँजनकाय२॥ उँदूँहाटकाय२॥ उँदूँजहा२॥ उँदूँ
 विद्ववे२॥ आवाहनादिवलिनेवद्य॥धनजद्वया॥ नेरुत्यपमिमया
 म॥ध॥ ॥ उँदूँपमाय२॥ उँदूँगानाकाय२॥ उँदूँडव्यय२॥ उँदूँ
 वक्र॥ध॥२॥ आवाहनादिवलिनेवद्य॥धनडु पूर्ववृक्षनयाम॥ध॥
 ॥ ॥ उँदूँरुहमहनृतेधनमहारेववमधुपाय२॥ ॥ उँदूँ
 धर्माय२॥पूर्व॥ उँदूँज्ञनाय२॥दकि॥ध॥ उँदूँवेनाकाय२॥पधि
 म॥ ॥ ध्याय२॥ उरुव॥ उँदूँजधर्माय२॥आग्रय॥ उँदूँजका

नाय २ ॥ नैऋत्ये ज्वेनास्त्राय २ ॥ वायवे ॥ उद्वं ज्वेनैधर्याय २ ॥
द्वी ॥ ॥ अवाहना दिवलिनेवय नमध्या ॥ धर्तदिग पूजनयाय २
ना ॥ ॥ धर्तधूनकावकीलनयाविधि लिंमिक्कवृक्षा, संचा, य
उमश्व, कालापमानन, पाधनक ॥ दाधकनाकि मड्वायका
काय ॥ वाक्मधर्तमूलपाययजमानशकाले। दुकाय, कलक
यानां, धूनाधिर्जनकीलककाय ॥ शना ॥ ॥ कृपीयजमान
मूलपायशकाले कलककि ॥ यानां धूनां, अंगुलिला, यवला, सि

कखनकीलककायशना ॥ वेधिमूलपाययजमानशकाले
यालाककि ॥ यानां धूनां अंगुलिना, यवना, रुध्रखनकीलकका
कायशना ॥ सोधमूलपाययजमानशकाले मूतककि ॥ यानां धूनां
अंगुलिना, यवना, गजवनकीलककायशना ॥ ४ ॥ अश्वकलक
कि ॥ अंगुलिला, यवना, धजसिखनकीलककाय, कीलनया ॥
धर्तमानजीयकीकायाव, लैसासंख्याव निमिच्छनयाय ॥ स्नानया
य, पंचामृतन ॥ अलिस्नान ॥ चन्दनसिंदूर ॥ दिष्टिज्जाम, पूष्य ॥ स्ना

नादि रुठुकादि १० अक्षु मकु ६॥ दाजीयकी वाय ॥ वंगानिस्यं पा
वकी ईलाईवन गयाव ॥ उं दूँ ४५ ४ अक्षु य रुट ॥ अक्षु पाय लखन
हाय ॥ मूलमकु ६ निवी कृ ६ ॥ कवचन गाठनी ॥ अक्षु गु ६ नी ॥ अक्षु
६ लखन हाय ॥ रुठुकादि मकु वा अक्षु वानय ॥ धव २ मकु ६ जी
पा १० मध्यनाट धव मकु ६ पूजन ॥ आवा रुना दिवलिन वय ॥ व
लदावकी लन गाय मकु धव २ स ॥ सकल सैल पनडा हाय व आसुन
न ॥ ख ७ न ॥ चिनन ॥ दा ग या अक्षु पय ॥ मकु ४ ॥ उं दूँ रुठुक र

नवक्षु पा लाय पूर्वदिगं वरु २ ॥ सर्वविघ्ननाशाय २ ॥ सर्वदृष्टार्कणाय
२ यजमानस्य नृण्यकार्य सिद्धि रु दूँ ३ रुट ॥ विसक्ति हर लना ग
ला कपालाध कामया ॥ अस्मिन् गृहं गुनिष्टं गुआ पूर्व कल वास ॥ उं
रु वूँ जी साहा ॥ लारु मकु लन गाठय ७ ॥ कीलन गाय वाक ॥ पूर्व ॥
१ ॥ उं दूँ ३ विघ्नानक कक्षु पा लाय आ ॥ अयदि गी वरु २ सर्वविघ्न
नाशाय २ सर्वदृष्टार्कणाय २ यजमानस्य नृण्यकार्य सिद्धि रु दूँ ३
रुट ॥ पूर्व व ७ ॥ उं विगक्ति हर लया दिसकल हि ॥ आ ॥ अय ॥ २ ॥

ॐ हूं ३ अमि वताले रे व व क य पा ला य द कि ण दि गी व क २ सर्व वि
 धना ण य २ सर्व इ श स र य उ ज मान स नृ त् य का र् य सि धि गु ढूं ३ रु
 ट ॥ पूर्व व ० ॥ द कि ण ॥ ३ ॥ ॐ हूं ३ अमि जि का रे व वा य ने मृ त् य दि गी
 वे क २ सर्व वि धना ण य २ सर्व इ श स र य २ य उ ज मान स नृ त् य का
 र् य सि धि गु ढूं ३ रु ट ॥ पूर्व व ० ॥ ३ ॥ ॐ हूं ३ का ला क रे व वा य क य
 पा ला य प धि म दि गी व क २ सर्व वि धना ण य २ सर्व इ श स र य २ य
 उ ज मान स नृ त् य का र् य सि धि गु ढूं ३ रु ट ॥ पूर्व व ० ॥ ३ ॥ ॐ हूं ३ क पा ली ण

रे व व क य पा ला य वा य य दि गी व क २ सर्व वि धना ण य २ ॥ सर्व इ श
 स र य २ य उ ज मान स नृ त् य का र् य सि धि गु ढूं ३ रु ट ॥ पूर्व व ० ॥ वा य य
 ॥ ३ ॥ ॐ हूं ३ क पा द रे व वा क य पा ला य उ रु व दि गी व क २ सर्व वि धना
 ण य २ सर्व इ श स र य २ य उ ज मान स नृ त् य का र् य सि धि गु ढूं ३ रु ट
 ॥ पूर्व व ० ॥ उ रु क य ॥ १ ॥ ॐ हूं ३ री म नृ प रे व व क य पा ला ॥ १ ॥ न
 दि गी व क २ सर्व वि धना ण य २ सर्व इ श स र य २ य उ ज मान स नृ त् य का
 र् य सि धि गु ढूं ३ रु ट ॥ पूर्व व ० ॥ १ ॥ न ॥ ३ ॥ ॐ हूं ३ वि ष्णु व च क रु सा

^{२४}
 यजुर्द्विगं २ सर्वविघ्ननाशय २ ॥ सर्वइष्टासंलय २ यजमानस्य का
 यसिद्धिदुर्दं ३ रुट् ॥ पूर्ववत् ॥ अर्ध ॥ १० ॥ उं दूं ३ वृक्ष (षापमरुका
 यजुर्द्विगं वद २ सर्वविघ्ननाशय २ सर्ववै ॥ इष्टासंलय २ यज
 मानस्य नृत्पकार्यसिद्धिदुर्दं ३ रुट् ॥ पूर्ववत् ॥ दुर्द्व ॥ १० ॥ उं दूं ३
 रुट् नृत्पश्चमरुहववायमधुपायनक २ दूं ३ रुट् ॥ म (ध ॥
 १० ॥ पूर्वादिम (ध ॥ स्वस्वमनुष्यपूजय ॥ पूर्वादिम (ध ॥ आवा
 रुनादिवलिनेवय ॥ ॥ श्रुतिकीलनगायविधि ४ ॥ ॥

धनधूनकावज्जगिस्कापनं ॥ रववाग्निमगन ॥ जथापूजनं विधि
 गथाश्रुतिकानय ॥ ॥ धनधूनकावडधामननाटधनसपध
 हावपूजायायकत्वं ॥ स्वानकाय ॥ पशुगर्पण ॥ दसवलि विय ॥ अ
 जयादि ॥ चवसधि ॥ वृक्षाद्यादि ॥ असिगाभादि ॥ रुट्कादि ॥ रुद
 यादि ॥ आवाहनादि ॥ विष्णुलया निमूया ॥ अमुष विस्कर्तुं ॥ मांसाश्र
 निपूष्ण ॥ धनधूनकावसीपदायपूजनं ॥ स्वस्तिकवायावडधामा
 दिपं पावनमाशुकास्वकावडधामा आदिपं पावनमापूजनप ॥

मूलघठकी॥ लासावस्वस्तिकचतनचाय॥ सकलसर्क॥ नाटध्वज
 मूलमकुटीपूजन॥ ॥ धनधूनढावलाइवढावमाणयाढावता
 लेनचावक॥ धनधूनढावपुष्टियाय॥ अरि वा दनादि॥ कोमानीपू
 जन॥ समय॥ ॐ ति० ग्याविधि॥ ॥ पुनविवरुनवियविधि॥
 नकसनाटध्वजपूजन॥ आचार्यस्य गालस्त्रिमूज४ पूजन॥ दि
 गपूजनस्य नाटध्वजपूजन॥ पशुगयदीयाय॥ गालस्त्रिद्वयाय॥
 धनधूनढावविवरुनवि यथासंख्यसमय४॥ धनविवरुनविथ

विधानी॥ ॥ पुन४ श्रीकजाठुपविनकसनाटध्वजपूजा॥
 धूनढावकलशपूजन॥ दिगपूजन॥ गालस्त्रिमूजपूजा॥ समदा
 यपूजन॥ धनधूनढावअग्निस्त्रपन॥ आद्रगियथापूजनन॥ स्वस्ति
 कसस्त्रढावगर्दिकावपूजनयाय॥ गच्छकावयाइवनस्वस्तिकवा
 यावपाखनसाखन॥ सागयाय॥ पाखदामानथव२ सगासद्वाच
 क॥ गच्छनपिक॥ धनधूनढाव॥ नंछिपठय॥ पंचगालथय॥ पा
 यमा आदिनसमयविधि॥ कोमानीपूजन॥ धनधूनढावपाखन

द्रुयक ॥ धर्त धून ठाव मांसाद्रु नि निवाद्रु नि ॥ दक्षिणागन माल
 काहामयाय श्रु ॥ दक्षिणा ॥ पूजुयाय ॥ अर्च सा अर्च विद्या ॥
 अर्च सकाय ॥ कामावी विस्तुर्जन ॥ यथा सर्गव समय विय ॥ धर्त
 र्च कर्जा उठपया विधान ॥ ॥ पुन ४ घाघ वर वयया विधा
 न ॥ नक सना ८ ध्वन पूजन दिग पूजन ॥ धन लिता लखि मूर्ज व
 वलि ध्वन र्च म धुया दव सस्ति कासनया ८ धप वय ॥ पूजन
 मूल वरु (जन ॥ स्वस्व मर्क ८ सस्ति कया याव शृणु आदिन घाघ व

या ॥ र्विया दव न ॥ घाघ वर पूजन मूल वरु (जन ॥ उं दूं हल मला
 नृ ए ध्वन र्च वया य ॥ मूल मर्क ॥ उं दूं कां रु याय २ ॥ दिव र्च (गन
 घाघ वर पूजन ॥ घाघ वर सव लि पूजन ॥ नैव य ॥ धर्त धून ठाव अग्नि
 स्थापन य ॥ ना ८ ध्वन पवा प वा वर व पूजा ॥ उद्या सनया च कर्त्तव्य ॥
 दक्षिणा वलि विय पूर्व वर पञ्च म पक्षि ॥ अर्द्र नि विय ॥ यथा पूजन न
 धा विधि ॥ मांसाद्रु नि निवाद्रु नि ॥ धर्त धून का वं प दाय पूजा या
 य ॥ स्वस्व मर्क ८ मूल वरु (गन ॥ धलिव प्या ख न मास्ति क सस्व

ननि मरुनादिमंगलं गाठवानदाय ॥ अथ पावली खनहाय अ
मु मय ॥ वसुधा नित्य केना ॥ धनं धनं नडावे उरा सैन द्या दव द्वा
य ॥ पविपातिन नृपया अननूपन ॥ द्या दव व वय ॥ संपदाय
वाजन द्वाय ॥ गालन्या सैया ॥ यथ कम द प्या खन द्वाय के त्व ॥
कामावी पूजन ॥ धव धव लूया आरु नि विय ॥ धनं धनं १०० ध
न ॥ धनं धनं नडावे मल मल द्वाय ॥ अथ सा अ शा द्वाय ॥
अथ ॥ समया या न याय ॥ धनं द्या दव व वय या विधन न द्वा ॥

गुरु ॥ ॥ अथ नृप सिद्धि विधि व द्वा ॥ नक स गुरु गा निमल द्वा
याय ॥ धन निवर्ग न याय ॥ कल द्वा याय या विधन ॥ पूर्व द्वा व सक
ल द्वा य व उ अ (नय स य व उ १ द द्वा द स य व उ ॥ नै स य स य व उ ३
पश्चिम स १ वायु य ३ उर व स उ ॥ नै स य स य व उ ३ धन दि ग क ल द्वा ॥
चिन न व द्वा दि ध व २ द्वा ॥ वनि ध व २ ॥ अथ पद्म म (ध चिन न ॥
ध लि लि द्वा व क ल द्वा य व उ न व ना ट क क ल स ॥ ध या चिन न द्वा दि
न गु गा ॥ ध न व स १ ध न व द्वा व क व द्वा ॥ १ ॥ वी व व क व द्वा

॥ २ ॥ कवू ८ धनू ४ पाणि ॥ ३ ॥ काध ८ कवू ४ ज ॥ ४ ॥ हास्यपी
 नताग ॥ ५ ॥ रुयानक (धनवर्ग) ॥ ६ ॥ वीरुत्तनील जालि श्री ॥ ७
 ॥ ॥ श्री दवकवेदी ॥ ८ ॥ सीम्यस्वगगाल ॥ ९ ॥ नवनाटकलेन
 याविक्र ॥ मूलकलेन नाथे धनवर्ग ॥ नदिमहालनगर्द ३ विक्र
 विमूल ॥ यजमानकलेन २ विनविमूल ॥ नवात्मानपूजा ॥
 मृत्पूजयेन ॥ भाहनी साधनदावकलेन गवठले विमृपूवमूल
 नदज न ॥ रीजनकलेन पाखनमाद्योकोसीमाल ॥ नोयखा

लदावकलेन पूवा दिदिगस ४ व्रीजानस १ ॥ दं वरुनदाय
 के ॥ धनधननदावथि लिडधनवर्गयाय ॥ धीखलुकपूव कस्तू
 नीधनगलावलं गिलाखान अष्टपयपयचाय ॥ गुफयादशना
 ॥ धलि लिधनवाययूनदाव क्रिया अष्टमयाय ॥ उं अखलुमलु
 लाकावलादिगुननमस्काव ॥ नगाकवाधन्यास ४ ॥ नंज उं दूंद ४
 अक्रायरुट ॥ उं दूंद कां अं गुष्टाय २ ॥ उं दूंद की गज्ज्वाला ॥ उं
 दूंद मध्यमार्थे वाघट ॥ उं दूंद अनामिकाये दूंद ॥ उं दूंद कां कनि

शयिववट् ॥ उँ दूँ ४ अ म्माय रुट् ॥ कल गल दय ॥ उँ दूँ जाँ
 दय यय २ ॥ उँ दूँ की निवस ०० ॥ उँ दूँ दूँ निखाये वीषट् ॥ उँ दूँ
 दूँ कवचाय दूँ ॥ उँ दूँ जाँ नय ययाय वषट् ॥ उँ दूँ ४ अ म्माय
 रुट् ॥ कना म्माय ४ ॥ पुन ४ ॥ उँ दूँ अ म्माय रुट् ॥ कन शुद्धि ४ ॥
 उँ दूँ अ म्माय रुट् ॥ अथ नम ४ ॥ उँ दूँ अ म्माय रुट् ॥ उँ दूँ लं मं ध मां य
 वाषट् ॥ उँ दूँ यं कवचाय दूँ ॥ उँ दूँ उँ नय ययाय वषट् ॥ उँ दूँ अ म्माय
 रुट् ॥ कव दय ॥ अ म्माय ४ ॥ उँ दूँ ४ निखाका न ॥ उँ दूँ स ४

नि स्तान ॥ उँ दूँ ४ ललाट ॥ उँ दूँ म ४ वकु मधु ल ॥ उँ दूँ ल ४
 ददि ॥ उँ दूँ व ४ नाहो ॥ उँ दूँ व ४ गृ ध ॥ दूँ य ४ जानो ॥ उँ दूँ उँ पा
 दय ॥ नवा दव न्यास ४ ॥ धन न्यास या दव मूल मनुष्य षड् (मं
 नज लयाय अर्घ पाय पूजनी ॥ अर्घा नामु ण जूव गु ८ नयाय ॥
 धन मूला अर्घ ना दि पूजनी ॥ अर्घ पाय पूजनी ॥ उँ दूँ जाँ अर्घाव ॥
 की ली (ग ॥ दूँ नाहो ॥ दूँ ददि ॥ ॥ ४ विद्र ॥ लाम विला म
 द रु ग शुद्धि ॥ नृत्त मूल मनुष्य त्म पूजा ॥ उँ दूँ व दन ॥

सिद्धि। पूष्य॥ ॐ स्वास्ति पूजा॥ मधुपयूकलिसर्वमायावज्जुर्ध
पायलैखनहाय॥ मन्त्र॥ लिखवलि विरय॥ धन॥ कृप॥ वदक
। गणपति॥ दत्तात्रेय॥ विसृज्जन्यादाव अस्मदलैखनहाय॥ मृ
लैनिरीकृष्ट॥ कवचनगाठन॥ अस्मदलैखनहाय॥ मधु
नदावनाटध्वनकलनिपूजायाय॥ मूलमन्त्र॥ हृदयादि
ॐ ह्रीं॥ नदिमहाकालनय॥ ॐ ह्रीं नदिमहाकालनय॥ नमः॥
ॐ ह्रीं ममहाकालमहाकालनय॥ ॐ ह्रीं नदिमहाकालनय॥ नमः॥
ॐ ह्रीं नदिमहाकालमहाकालनय॥ ॐ ह्रीं नदिमहाकालनय॥ नमः॥

सा॥ नाटध्वनकलनिपूजा॥ ध्वलिवधुलिपूजन॥ ॐ ह्रीं पद्मासना
यनमः॥ ॐ ह्रीं पद्मासनायनमः॥ ॐ ह्रीं वृषासनायनमः॥ हृदयादि॥
ॐ ह्रीं हृदयासनायनमः॥ ॐ ह्रीं वृषासनायनमः॥ मधु॥ ॐ ह्रीं मधु
गकय॥ ॐ ह्रीं अनकासनाय॥ ॐ ह्रीं कदाय॥ ॐ ह्रीं नालाय
नमः॥ ॐ ह्रीं पद्माय॥ ॐ ह्रीं कर्माय॥ ॐ ह्रीं कर्माय॥ ॐ ह्रीं
ह्रीं पद्मासनाय॥ ॐ ह्रीं पद्मासनाय॥ ॐ ह्रीं वृषासनाय॥ ॐ ह्रीं
धर्माय॥ ॐ ह्रीं धर्माय॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय॥ ॐ ह्रीं वेदाय॥

ॐ हूं

वायुय हूं श्वययि २ ॥ श्रीमान् ॥ ॐ हूं अधमयि २ ॥ पूर्वा ॥
ॐ हूं अक्षनाय २ ॥ दक्षि ॥ ॐ हूं अवेनाक्षाय २ ॥ पश्चिम ॥ ॐ हूं अने
श्वययि २ ॥ उत्तर ॥ ॐ हूं वामाय २ ॥ ॐ हूं २ ॥ ॐ हूं नैद्ये २ ॥ ॐ हूं
काल्ये २ ॥ ॐ हूं कनविकुक्षयि २ ॥ ॐ हूं वलिकुक्षयि २ ॥
प्रमथये २ ॥ ॐ हूं सर्वरुगदमये २ ॥ ॐ हूं महौ नात्मये २ ॥ ॐ नि
पूर्वादीशान्तेषु पुजने ॥ ॥ पुनः ॥ ॐ हूं ॐ काशिकय २ ॥ ॐ हूं
क्षान्तिकय २ ॥ ॐ हूं क्रियाशक्तय २ ॥ ॐ निपद्मसंध्यपू

जने ॥ गताध्वाने ॥ ॐ हूं वृषावृषासने दर्वचकवकी जिलावने ॥ ॐ हूं
वर्षुमहादीर्घिनागकुक्षुलमधुगि ॥ ऊगकूटशशावृषीवातशु
जसारिगा हूं नृत्त्यनूपंठमनृषिधूलमवच ॥ विदधुगववकी
चकलिकाश्रुदक्षि ॥ ॐ हूं गधवाभनृयवखदाभं पद्मभवच ॥ ना
गंधनृगधयशकपालचकमधुल ॥ सरुमसूर्यकाशकला सं
रिन्नचनृत्त्यय ॥ नृत्त्यगातलयदवगाधुवं विश्वनृपक ॥ रेवर्नृ
त्त्यपृषासर्वीलकालसीरित ॥ एवध्वामहादव ८ नाशकार्य

आ (नयने) एवाय कलियुगाय २॥ वृंभन ॥ वाक्माध्यादि ॥
 उं हूं अं वक्रा (धेनम) ४॥ उं हूं को अं रेववाय २॥ उं हूं की कं
 माह ध्येनम ४॥ उं हूं की वृं रेववाय २॥ उं हूं वं की मा २॥
 उं हूं की वं धुरेववाय २॥ उं हूं की टं वे वृं वे २॥ उं हूं की का धं रेववा
 य २॥ उं हूं लीत वा वाक् २॥ उं हूं की उं लम कं रेववाय २॥ उं हूं
 वृं की पं वृं दाय (धे) २॥ उं हूं की कं पाल रेववाय २॥ उं हूं की यं वा
 मं वृं यं २॥ उं हूं की रीसन रेववाय २॥ उं हूं मीं धी समलाल २॥

उं हूं की सीहा रेववाय नम ४॥ पूर्वादी भनार्क ॥ ॥ नं जहलम
 हानृ एध्व रेववाय नृ ए लक्ष्मी सहि गाय २॥ म (धे) ॥ मूल वृं (नं न
 पूजनं ॥ वाक् लो कपाल पूजा ॥ उं हूं लूं वृं द्यादि १० पूजनं ॥ उं हूं अं वृं
 विं गतिन द्वाय २॥ २८ ॥ आवाहना दिवलि नव ३॥ धं गं धं धिलि
 पूजनं ॥ ॥ अथ धं धिलि ठाव कल गी पूजनं ॥ उं हूं सं वृं गं
 वृं पम हरेववाय आध्व वं कि सहि गाय अवतन २ खाह ॥ १ ॥
 उं हूं वं वीं वृं पम हरेववाय धं मं गि कि सहि गाय अवतन २ खाह ॥

॥ २ ॥ ॐ कनूयूपमहारेववाय अनीदग कि स हि गाय अ व ग
 न २ स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ वूपमहारेववाय वेवाङ्ग कि स हि गाय अ व
 ग न २ स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ हरे हरे हरे ववाय वी श्वर्य कि स हि गाय
 अ व ग न २ स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ हरे हरे हरे ववाय अ व न कि
 स हि गाय अ व ग न २ स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वं वं वं वूपमहारेववा
 श्वर्य कि स हि गाय अ व ग न २ स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ

वं वं वं वूपमहारेववाय अ कि स हि गाय अ व ग न २ स्वाहा ॥

॥ ८ ॥ ॐ सोम्यूपमहारेववाय अ धर्म स हि गाय अ व ग न २ स्वा
 हा ॥ ९ ॥ धन धातु लिङाव कल ग पूजा ॥ पूर्वादि कु म धा ॥ दद्यादि
 व ठा धन ॥ मूल मकु धा मूल कल ग पूजनी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ग धा पति ना ध
 य ॥ विष्णु श्वाय वि नाय काय (सो न म ४ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं धा व द क ना ध य वि
 धा धि प त य २ ॥ ॐ ह्रीं न दि रे व वा य २ ॥ ॐ ह्रीं म म हा काल रे व वा य २
 ॥ ॐ ठि लि ज व र व पू ज नी ॥ कल ग व ठ ४ ॥ ॥ धन धन धा व
 दि धा न पू ज नी ॥ ॐ ह्रीं मा या य २ ॥ ॐ ह्रीं सा नि धा ना य २ ॥ ॐ ह्रीं सा नि

दानासुनाय २ ॥ उँ हूँ अष्टदाय २ ॥ उँ हूँ हनयुगमय २ ॥ उँ हूँ रुद्रा
 य २ ॥ उँ हूँ वजाय २ ॥ उँ हूँ कमुदाय २ ॥ उँ हूँ निनिनाय २ ॥ उँ हूँ उल्लोका
 य २ ॥ उँ हूँ उवलोकाय २ ॥ उँ हूँ सलोकाय २ ॥ उँ हूँ सामाय २ ॥ उँ हूँ ज
 गनाय २ ॥ उँ हूँ पुत्रसाय २ ॥ उँ हूँ पुत्रसाय २ ॥ उँ हूँ सानिकलादा
 वाय २ ॥ उँ हूँ गणपतये २ ॥ उँ हूँ सर्वेश्वरे २ ॥ उँ हूँ महालक्ष्मणे २ ॥ उँ
 हूँ नैदिने २ ॥ उँ हूँ गमये २ ॥ उँ हूँ महाकालाय २ ॥ उँ हूँ यमनाय २ ॥
 उँ हूँ असि नवाय नमः ॥ उँ हूँ वक्राक्षे नमः ॥ उँ हूँ रुद्रकणे नवा

य २ ॥ उँ हूँ दानाधिपते नवाय नमः ॥ अर्चनी ॥ उँ हूँ अष्टजुजा
 महावीर्यविनयावाहनचक्रविजय पार्श्वशुक्रमालाश्रयदक्षि
 ण ॥ नीलाय लतथाचक्रशुक्रयाविद्वामके । कृष्ण शुभास
 वीलकालहविता ॥ कलः रुद्रसमाख्यातापूर्वादिगवक्रकी । यज्ञ
 वरसूत्राज्यसादन ॥ ॐ नित्यानी ॥ आवाहनादिवलि
 नेत्रय ॥ ॐ तिपूर्वधा ॥ ॥ उँ हूँ इन्द्राय नमः ॥ उँ हूँ शक्र
 २ ॥ उँ हूँ विद्विनाय नमः ॥ उँ हूँ कमुदाय २ ॥ उँ हूँ रुद्रकणे नवाय नमः

ॐ ह्रीं यशोवदाय २ ॥ ॐ ह्रीं वेगाय गाय २ ॥ ॐ ह्रीं यमदध्याय २ ॥ ॐ ह्रीं
पृथ्वीकाय २ ॥ ॐ ह्रीं रम्भाय २ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्जनाय २ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्जनि
काय २ ॥ ॐ ह्रीं ॐ द्याय २ ॥ ॐ ह्रीं जम्बाकाय २ ॥ ॐ ह्रीं सलोकाय २ ॥
ॐ ह्रीं लोकाय २ ॥ ॐ ह्रीं वृषाय २ ॥ ॐ ह्रीं वृहस्पतये २ ॥ ॐ ह्रीं जघ
न्याय २ ॥ ॐ ह्रीं शुक २ ॥ ॐ ह्रीं विशाकलाद्याय २ ॥ ॐ ह्रीं गण
पतये नमः ॥ ॐ ह्रीं सप्तस्वये २ ॥ ॐ ह्रीं श्री नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं निम
२ ॥ ॐ ह्रीं विनायकाय २ ॥ ॐ ह्रीं नावदाय २ ॥ ॐ ह्रीं का ॥ ॐ

हुँ चतु रे नवाय २ ॥ हुँ को माये २ ॥ हुँ अग्नि वला रे नवाय
 २ ॥ हुँ तय नूदाय २ ॥ ध्यान ॥ हुँ वप्र खेदाद ग उर्ज विनय
 (लकर्स कुली। पवतु पाण सुख म मृग (येव च ॥ धन ४ सर्व
 रुट की वपा नपा प्रम हास्य। मृग बा अरु एते पर वहा म
 रुमी ॥ अली टपा दसं ला व मूदा दे लुक म लुली। वदनान लम
 कृष्ण चर्म म हाय ॥ सिद्धि यज्ञ मया वीरु क विद्या मिम हाय ॥
 प नाय को कृ ना चालय नाम हाय ॥ दक्षि (दि ग मा धिता

साधकानां हिता त्वया ॥ इति ध्यान ॥ अवा रुना दिवा लिने वय ॥
 तिदक्षि (वा व पूजन ॥ ॥ हुँ सुभखाय नमः ॥ हुँ की ल्दि
 गा व लुय २ ॥ हुँ स्व माय २ ॥ हुँ वालाय २ ॥ हुँ का ध रे नवा
 य २ ॥ हुँ वे व २ ॥ हुँ अग्नि कोय २ ॥ ध्यान ॥ हुँ ने म ल्य दि
 ग मा लाय पूजय वा द सा धि प ४ ॥ एक व क व रुवा इ वि न र्ग ल म
 जि की की। वि वि क्रि नाम नी गा न व मा सं व रा ज नी। स्व म रु ट क म
 र्द ल म धू वा न न्य व त सा। जाले व ग र्ज ली क्त्वा म हा द ल प वा क मी ॥

खड्गमुद्रापदागतगर्जणीवामतः ४ कर्णः । पत्वालीरुं कर्णपादं ध्या
वयवविचित्रं । स्वदिगच्छिमानननरुणीयं यत्नतः ॥ मया
क्रियाविशेषकस्तुमात्रमृतं ॥ आवाहनादिवलिनेव
द्य ॥ इति नेम्यविदिगद्वात्रयूजनं ॥ ॥ उं हूं स्वाहा ॥
उं हूं वन्दनाय नमः ॥ उं हूं सामवेदाय २ ॥ उं हूं वायवे नमः ॥
२ ॥ उं हूं यय ॥ उं हूं संस्कृत्यय २ ॥ उं हूं अयमि २ ॥ उं हूं मित्र
यय ॥ उं हूं पुत्राय २ ॥ तसंजीवये २ ॥ उं हूं अमृतसंजीवये

२ ॥ उं हूं अमृतसंजीवये २ ॥ उं हूं जनलाकाय २ ॥ उं हूं गपला
उं हूं पुत्राय २ ॥ उं हूं गनेश्वराय २ ॥ उं हूं धामाय २ ॥ उं हूं विधाताय २ ॥
उं हूं कलाधाराय २ ॥ उं हूं गणपतये २ ॥ उं हूं सवसवे २ ॥ उं हूं म
हालये २ ॥ उं हूं २ ॥ उं हूं कर्णाय २ ॥ उं हूं सिधवे २ ॥ उं हूं उम
रुहवे वाय २ ॥ उं हूं वावाये २ ॥ उं हूं लाकरेनवाय २ ॥ उं हूं वाधि
पतये वक्र ॥ २ ॥ ध्यान ॥ उं हूं वेष्मपाथिमरागपुत्र गं वृत्त
वलि विहिमखकनीकाय सूर्यपूर्वमूर्खकनी । द्विभुजं गण्डमद्वे

ॐ न्यरुसिर्गमूर्ख। पाशवकठुनी। धेवनागकाशासमावृती॥
 जयकुलकमलधराय। दस्तानक। मूर्धाप्रदगयित्वा। गंकल
 यंकाश्वपदगय०॥ विघ्नहृगाधकूराधुपना। धेवविनायका४।
 निर्विघ्नकगवान्दवमयायागंकनामहं॥ ॐ निध्यानी॥ आवाहना
 दिवलिनेवय॥ ॐ गिपश्चिमदावाचनं॥ ॥ उँ हूँ धुरं कथे २॥ उँ
 हूँ विद्विदगावधाय २॥ उँ हूँ धजाय २॥ उँ हूँ सर्वनयाय २॥ उँ हूँ क
 पालारिववाय २॥ उँ हूँ ॐ दाय (व्ये २॥ उँ हूँ कलालारिववाय २॥

ध्यानी॥ वायुवदिनिमागृत्तकोलावायगपूजितं। शिवकूचकु
 जा। धेवविनशादिर्नूपिणी॥ धजायकनधाकर्णकनधजुद्धमा
 लि ॥ नकापयपिश्रलं ववीजपूवकरुसुकी॥ पूजयतर्तगधर्व
 पूषनेवयकेसु धकानांदिगाधायपूजयदवता॥ ॐ निध्यानी॥
 आवाहनादिवलिनेवयनिवायूयदावाचनं॥ ॥ उँ हूँ धिय २॥ उँ हूँ
 अनाअगावधाय २॥ उँ हूँ अ २॥ उँ हूँ कलियुगय २॥ उँ हूँ ग
 दाय २॥ उँ हूँ सुखाय २॥ उँ हूँ विभव २॥ उँ हूँ य २॥ उँ हूँ अ

शुकाय २॥ उँ हूँ धूम्राय २॥ उँ हूँ धीपदाय २॥ उँ हूँ सत्यलोक
 मूललाकाय २॥ उँ हूँ विवाहाय २॥ उँ हूँ पतिषाय २॥ उँ हूँ गणगय २॥
 उँ हूँ २॥ उँ हूँ महालक्ष्मी २॥ उँ हूँ दवेय २॥ उँ हूँ चक्षुय २॥
 उँ हूँ गाय २॥ उँ हूँ पवा २॥ उँ हूँ बाहव २॥ उँ हूँ कनव २॥ उँ हूँ
 लीसनरेववाय २॥ उँ हूँ वामुक्षाय २॥ उँ हूँ पादरेववाय २॥ उँ
 हूँ धावाभिपतयविष्णुवमम ४॥ ध्यानं ॥ उँ पूजयद्देवमूर्तिस ४वर्ग
 कुमहावली। अष्टकुजोमहाकागावर्तुलाचक्षुषीयूरी। स्वधाभिवल

दधुध्वनतदामिकरुसुग ४॥ उमत्रुमूनीवाशूलैगर्वध्यातयतमेक
 ग ४॥ वेलाक्षकुत्रयसर्वदिगदिक्षुधैपूवता। विधिहृगामहायोया
 विष्णुगामुदिगागव। धावयदयगीहृत्वा मूया। धैवपदगना। आका
 यादवदवगनाटध्वनविग्रह। स्वदि। एवदृष्टाधयस्थापयनम
 मागवाग॥ ॐ निध्यान ४॥ आवाहनादिवलिनेवय॥ ॐ एतन्वधा
 वाचनी॥ ॥ उँ हूँ (गेय) २॥ उँ हूँ पुष्टिदतावधाय २॥ उँ हूँ विशुला
 य २॥ उँ हूँ २॥ उँ हूँ संहाररेववाय २॥ उँ हूँ महालक्ष्मी २॥

ॐ ह्रीं श्रीं मन्त्रपमहोरनवाय ध्यानं ॥ ॐ श्रीं गहनकाशमा
 न्त्यपगाकाय विशूलम् । स्त्राययच्च दिग्दश ॥ किमरुध्ववः ॥
 खन्नामूल्यलनागमरुयवीजपूर्वकं । मूर्धुचगृध्रमकं तर्जुणीत
 था ॥ पीयगपानघायचद्विरुक्तनमहावली । कदाञ्चकृतीना
 म् ॥ गिरिगा ॥ कुलमीगहनदवस्यत्रुपसंचित्यकृवकी । पूजयत्कुलम
 गहन ॥ ह्यनिधयः ॥ यत्वारुणकीपादमूद्रावेवयदस्थिः ॥ ॐ
 निध्यानं ॥ आवाहनादिनेवयः ॥ ॐ श्रीं गहनदानार्चनं ॥ ॐ ह्रीं वका

यः ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय ॥ ॐ ह्रीं ह ध्यानं ॥ ॐ ह्रीं नेत्राद्यदिनि
 रागगुगत्वादयवकुपूजयः ॥ विरुक्तचक्रसंख्यं सफकरुधि
 र्गं । अक्षरागप्रपूजकं अनन्तामूर्धदवती । अस्मिन्मद्रादस्थ
 काकृतिमहाधुरी ॥ ॐ निध्यानं ॥ आवाहनादिवलिनेवयः ॥ ॐ ह्रीं वका
 नार्चनं ॥ ॐ ह्रीं पद्माय ॥ ॐ ह्रीं वक्त्रं ॥ ॐ ह्रीं गात्राकाय ॥ ध्या
 नं ॥ ॐ ह्रीं पूनं ॥ गहनकी गत्वा पूजयद्भुद्वयवगा । विरुक्तचक्रमूर्खाह
 र्गपीगवधुमहाधुरी । पद्मरुक्तध्वजध्वदवदवापितामहं । ह्रीं सात्वर

महावाङ्मय विधि विनाशनं । उद्धर्तुं मुखकृत्वा च पूजयेत्कृतम
तिष्ठति ॥ ॐ तिष्ठति ॥ आवाहनादिवलिने वयः ॥ ॐ पूर्वद्वारावर्त्तनं ॥ ॥
ॐ ह्रूं कालामधुयायनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ पीयूषपात्रपात्रं । सूत्रासं पृ
थुगं । संपूर्वा । संप्रित्यग्नः ॥ स्वयं पृथुगं । कथावक्तुनिर्गता । धी
गकिं । रववृत्तं । कालानलसमपरी । धारात् । दक्षिणागतः ॥
सुवलिदीयते ॥ पूजयेदवदवः ॥ ॐ मधुलाघपूजः ॥ संप्र । धीग
वाङ्मयासुदि । संप्रतिष्ठति ॥ यगाविनायका कृत्वा निर्विघ्ना ह्यगद

द्वयम् । कृत्वा कलाकाश्च वाचयदवदवका । तस्य साधो न
याद्विप्रमिदानी ॥ ॐ ॥ ॐ तिष्ठति ॥ आवाहनादिवलिने
वयः ॥ ॐ निमग्नपस ॥ ॐ तिष्ठति ॥ विधिः ॥ ॥ तता
घटपूजनं ॥ ॐ ह्रूं ॥ ॐ मयाय ह्रूं ॥ ॐ ह्रूं वास्तविपत ॥ ॐ ह्रूं
कांक्षुपालाय ॥ ॐ ह्रूं गंगायतये ॥ ॐ ह्रूं गंगुत्राय ॥ ॐ ह्रूं
॥ ॐ ह्रूं ननदिन ॥ ॐ ह्रूं महाकालाय ॥ ॐ ह्रूं गंगाय ॥ ॐ ह्रूं
ॐ ह्रूं ॥ यक्षवाम ॥ ॐ ह्रूं लू ॥ ॐ ह्रूं ॥ आवाहनादि ॥ पूर्वदि

गकलङ्गपूजनं ॥ ॐ हूं ग्रय २ ॥ आवाहनादि ॥ आग्रय ॥
 ॥ ॐ हूं गङ्गापतय २ ॥ दक्ष ॥ ॐ हूं हस्तिन २ ॥ ॐ हूं मूयमा
 य २ ॥ मध्य ॥ आवाहनादि ॥ दक्षिणकलङ्गपूजनं ॥ ॐ हूं हस्तिन
 लाय २ ॥ मध्य ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ दक्षिणकलङ्गपूजनं
 मध्य ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥
 नं ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥
 दाय २ ॥ दक्ष ॥ ॐ हूं सागवाय २ ॥ वाम ॥ ॐ हूं वृषवाय २ ॥ मध्य ॥

ॐ हूं सर्वयानि नो २ ॥ नो हस्तिन लायनमः ॥ ॐ हूं महालक्ष्मी २ ॥ व
 नुष्टवायाम् ॥ ॐ हूं पश्चिमकलङ्गपूजनं ॥ ॐ हूं वायव २ ॥ म
 ध्य ॥ ॐ हूं गङ्गापतय २ ॥ वायूरुचमः ॥ ॐ हूं सनख २ ॥ वायुपश्चि
 ममध्य ॥ ॐ हूं वायवकलङ्गपूजनं ॥ ॐ हूं द वाय २ ॥ मध्य ॥ आ
 वाहनादि ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥
 २ ॥ पूर्व ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥ आवाहनादि ॥ ॐ
 ॥ ॐ हूं दिगविदिगकलङ्गपूजनं ॥ ॥ गत ४ पञ्च ग
 ॥ ४ ॐ हूं वृषवाय २ ॥ दक्षवाम ॥ ॐ हूं गङ्गापतय २ ॥

ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥
 ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥
 ॐ हूं हस्तिन लायनमः ॥

यसाधनपूर्वाह्नि ॥ उँ हूँ कौं दद्याय २ ॥ (गजलाय २ ॥ पश्चि
 म ॥ उँ हूँ कीर्तिनस (गमया ॥ उँ हूँ हूँ निखाये घृताय २ ॥ दक्षि
 (६) ॥ उँ हूँ कौं कवचाय दधिन २ ॥ पूर्व ॥ गायत्र्यय २ ॥ मध्य ॥ उँ
 हूँ सरुमवाहवाय विमरुगाधुवाय सुधीमरु ॥ पश्चादयात ॥
 गायत्री ॥ धनकसधवा ॥ उपनय ॥ नृस्येध्वमूलवर्तनमयू ॥ मि
 श्रितयादाव ॥ कौं हूँ गायत्रीनमूलवर्तनमयू ॥ धनकसधवा ॥
 धन ॥ ४ ॥ ॥ निवर्गकिल्लवलासनपूजा ॥ उँ हूँ वलासनाय २ ॥
 कौ

उँ हूँ अस्त्राय दद्याय २ ॥ उँ हूँ अस्त्राय निवर्गस्त्राह ॥ उँ हूँ अस्त्राय
 निखाये वोषट् ॥ उँ हूँ अस्त्राय कवचाय हूँ ॥ उँ हूँ अस्त्राय नयययाय वष
 षट् ॥ उँ हूँ अस्त्राय रुट् ॥ धनकसधवा ॥ उँ हूँ अस्त्राय हूँ रुट् ॥ ध
 नलय ॥ अस्त्रनावद्धवर्तन ॥ स्वचाकल्लस्त्रधवा ॥ रुट् ॥ अस्त्राय द
 क्षिधवर्तन ॥ उँ हूँ यस्त्राय स्यस्त्राय वदवानि रुट् ॥ अस्त्राय व ॥ मयस्त्रवा
 रुनाथयि नृस्यकार्यसिद्धिर्दु ॥ वाक् ॥ पून ४ धिवासन ॥ उँ हूँ आध
 वगकय २ ॥ ॥ एयादिश्रमनी ॥ उँ हूँ वृषासनाय २ ॥ उँ हूँ शिवासनाय

२॥ॐ ह्रीं ह्रीं वासनाय २॥ अद्यावत् रुकावत् सकावत् ॥ नृत्तं
वमूलमनु ॥ दद्यादिवत् (न) ॥ आवाहनादि ॥ वलिनेव
द्य ॥ यजमाननगिवत् किकलपूजनं ॥ थं ठियाजवसा ॥ मू
वसकावत् ॥ अद्यावत् वक्रवती नियय ३ ॥ थं ठिलिपूजनं मूल
वर्त (गन) ॥ मूलमनु ॥ धनलि अत्रिकाय ॥ हे ववा नि
मत् ॥ दक्षक्रिया ॥ यथा ॥ अद्रुति ॥ पूरु ॥ निपूरु जनक
लक्षपूजा ॥ ॐ ह्रीं नमः ४ सरुप्रवाहवविग्रह पशुधामह गन्ना

सिद्धि विद्युध्वज ॥ रुमलु लज्जवत् २ साहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
प्राप्त सर्वइष्टान् नागय २ ॥ देवदत्तवत् २ ह्रीं ३ रुद्रसाहा ॥ पूनम्
य यनामनपूजनं ॥ आवाहनादिवलिनेवद्य ॥ धनं जन
कलपूजा ॥ (थं दंथ शायमल ॥ ॐ का ग ॥ सगा ॥ कलस
॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं यकवि सर्वयिभव धनं ४ सर्वया नि
नीवाववीन न्यायसमगनाधिपतय ॥ ॐ ह्रीं अलिवलिसहिर्नृद्र
साहि २ साहा ॥ गगनवलि ॥ ॐ ह्रीं नृत्तं वमसहारे ववायनोद्रनोद्र

त्रिविधायपदीफदीफाययूगकात्रकसमयरायगद्यथाहृन२
 दह२पव२मथ२रु२हृद२हृद२यनहृनीयनकात्रयितंय
 नइविर्गइहृ२४२निवीकिर्गसर्वसत्वचम२खाहि२यनमाकना२
 य२अनिहृकापय२ययैरुहृय२२२कननियतंउसपूयसवा
 ध्वाना२य२रु२रु२३खाहृ॥२॥निदिगवलि४॥॥द२वलि२
 समयवलि॥अजनादि॥उतयवा२कृ२॥ववृ२थियानिनि॥व
 गी२या२गिनी॥सहावलि॥धर्तजलसिवलिसविय॥नय२॥

विसर्जना॥॥अथमाहृनी॥वकृद्विका२२२वि॥अ२वि॥कपू
 व२उप॥पूका॥अ२इइवाधतगर्ह॥नवमा॥सा॥दय२जलि॥हो
 हामलसा॥॥धर्त॥वलिपाग२२खालपाग२२दिनि२॥पूज
 हृक॥रु२कादि॥व२आ२आदि॥व२दृ२नी॥व२किनी॥विपू२मूलम
 कु२॥जापधर्त॥माहृनियार्ग२२इति॥विपू२मूलमकु२॥॥
 धा२१००॥मूलपा२॥ध२आ२इति॥वि२य॥सो२रा२अ२का२नी॥२॥
 द२आ२कृ२॥२॥१०००॥॥जी॥ल१०००॥आ२इति॥म२दा२नि२ध

म (ध) उ द्ध ॥ धन पूजन ॥ आवाहनादिवलिनेवय पञ्चदशति
॥ पश्चिमा ॥ यिनायस्वा ललावद्यष्टपूजा ॥ ॥ खालपतिश ॥ दश
मकु ॥ उं हूँ म ह दया दिवठ (ननसंपूज ॥ वलिनेवय ॥ म
लमकुधश्रुति पूजु ॥ धान ३ ज ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
मृसासनलिर्गदर्व गफवामीकना लडुकुरुर्कच ॥ नृत्तवाहुक
नदय ॥ उर्व वि धुधर्व धात्वा वि मास्यह ॥ उं हूँ म ग गृ ग ४ (म
मु ॥ गधपतिनाथयसर्वमारुनकावधाय वि विद्विद्विद्वि

हृगिसहि गायनम ४ कीस्वारा ॥ संपूज आवाहनादिगजमुद्रा ॥ ध
यस्वालयुजा ॥ ॥ तालपयपूजा ॥ नाटधनमूलचण (मि
॥ श्रुतिधान २ तालपयपूजा ॥ ॥ धन दव दवीपूजन ॥ अ
श्रुति ॥ ॥ तगावाजनपूजन ॥ उं हूँ तीर्तवती गमूर्त्तय ताल
यनम ४ गाल ॥ ॥ उं हूँ नदिमधुलायनम ४ ॥ जव ॥ उं हूँ मेरु काल
मधुलायनम ४ ॥ खव ॥ ॥ उं हूँ नैलुमरु कालायनम ४ ॥ मृज ॥

॥ ॐ हूँ क का सत्याय नमः ४ वलि ४ ॥ ॥ ॐ हूँ क क रु लि
सि हा नमः २ ॥ धी ग ॥ ॥ ॐ हूँ क काल मूर्त्य निर्वजन पत्ताय नमः
४ ॥ ग ४ ॥ आवा रु ना दि वलि ने वय ॥ ॥ ॐ हूँ व वि भू व गाल धवा
त्मनः २ ॥ ताल धवा ॥ ॥ ॐ हूँ व व म ॥ म धु धवात्मनः २ ॥ न दि म
हा काल विं धा क ॥ ॥ ॐ हूँ न न दि क धवाय मूर्त जवाय धवात्मनः
॥ ॥ मूर्ज का व ॥ ॥ ॐ हूँ क कि न्नाय सत्य धवात्मनः २ ॥ व
वलि धा क ॥ ॥ ॐ हूँ ग ग न्ध वायि सि हात्मनः क रु ली धवा

धी ग पू व ॥ ॥ ॐ हूँ उ व्वाय २ ॥ ॐ हूँ ना वा दाय २ ॥ ॐ हूँ हा हाय
२ ॥ ॐ हूँ हू हू ॥ गायन ग वि ध वि धा ग ॥ ॥ ॐ हूँ क काला
त्मनः निर्वजन पट धवात्मनः २ का व ॥ ॥ ॐ हूँ म मृ त्य व
निर्वजन पट धवात्मनः २ ॥ ख व ग ष का य ॥ मू ॥ ना ट श्व
व मूल व ठी (गे न र्म पू ष ॥ आवा रु ना दि र्म पू ष वलि ने वय ॥ थ
पू जनी ॥ ॥ ग ता र्प व री ढ षा ल पू जा ॥ ॐ हूँ उ हू व क
नृ त्य धवाय स रु ॥ ॐ हूँ न त्प न्वा नृ त्य धवाय पी त री ढाय

नमः॥ उँ हूँ अघात्र नृत्त ध्वजाया युनमः॥ उँ हूँ वामदेवा
यनृत्त ध्वजाय नक्रवैद्ययः॥ उँ हूँ सदात्र नृत्त ध्वजा सर्वदा
यनमः॥ धर्तवैद्ययः॥ ॥ ध्यालिव स्वस्तिकसम्याखनमासु
लपाठु नखनासाधुप॥ उँ हूँ अघात्र नृत्त ध्वजा
कृष्ण॥ मूलन नृत्त ध्वजा॥ ला॥ मत्तर्तगात्र नृत्त ध्वजा॥ मूल
ननिनी कृष्ण॥ कवचनगात्र नृत्त ध्वजा॥ दयन नृत्त ध्वजा॥ ॥ उँ
हूँ हूँ मत्तर्तगात्र नृत्त ध्वजा॥ यज्ञकथाखनमादवदरुपाय

नासनाय हूँ हूँ॥ उँ हूँ कांठदयायः॥ ॥ हूँ हूँ दिव्य उँ हूँ नृत्त
ध्वजा॥ उँ हूँ सदात्र नृत्त ध्वजा विद्युत्तात्र नृत्त ध्वजा॥ तन्ना नृत्त ध्वजा
वादया॥ निवसध्वजा॥ जाय॥ ॥ धर्तध्वनकावपठु (धधन
॥ चेलसपाशाग विद्युत्तात्र नृत्त ध्वजा॥ यज्ञकथाखनमादवदरुपाय
निवसध्वजा॥ पर्वध्वनावाय॥ पूर्वदि॥ मासाद्वानि निवाह निपुष्टुपिथ
न॥ ॥ वीशाद्वानि॥ तालादिन संप्रदायकाय॥ ध्यालिवद्यटर्त
ऊर्त॥ लुदानद्यटकाय॥ कीनकीतायाव श्वाश्वस्य मनुपठप

118412122123124

ভাষ্য

ASHA ARCHIVES

3596

॥ उँ हूँ वृणु श्वरमहादेव नृप पावता विनः ॥

विनाः ॥

यसर्व सिद्धि सुसंपत्तिः ॥ अगच्छतु गव नयवताय सिद्धिश्चकान
घृणनस्य किं सत्वाथि यत्रिषुवर्षं ॥ मूलमर्क ॥ उँ हूँ सिद्धि

सिद्धि सुसिद्धिः

न ॥ दवय कृपया द्दिर्गं गुर्यं ॥ सदा कृ

नि ॥ य कृपुर्हूँ ॥ आसंसा ॥ ता

अगच्छतु ॥ वसुधा ॥ गयक

॥ गिवर्ग किं कलं विमर्क न ॥ अरि सव ॥ चत ॥

अगीवा

या ॥ आव धीपुनि सातवान ॥

॥ विष्काल लैकनी ला काय ॥

दव

गिनिखति शाय ॥ नठन प्पाखभा दाका ॥ थव थव व

निधान र्दठ तिचक ॥

वयिनाय खाल ठाव क लं गुरु उ ॥

उँ हूँ ग ॥ कृपाय रुट ॥ विमर्क न ॥ क सकन स गठाय ति वरुं गवी

जयायाव गठ पति सु मूलमर्क पठये थ पपाव ॥ अ नृप न ॥

गमूखा दिसी नया म ॥ काया वि ॥ वन ॥ उँ हूँ ग ॥ सि नृमूखाय अ

वगव २ की खाहा ॥ उँ हूँ ग ॥ कृ मूखाय अ वगव २ की खाहा ॥

उँ हूँ ग ॥ ग मूखाय अ वगव २ की खाहा ॥ उँ हूँ ग ॥ कृ मूखाय

यश्च वगन २ की साहा ॥ ॐ हूं (गो) व का मुखायश्च वगन २ की
साहा ॥ सवस्मिकमर्क कं कृत्वा ॥ पूजय ॥ ॐ हूं गं गौं गूं (गो) (गो)
ग ४ गणपतय सर्व विघ्निरुवाय नात काय सिद्धिय विद्धि सि
सिख ग कि स हि ता य हं गि स हि त सर्व मा रु न का वि (६) रु न
मे ना था य म हा ग ण प त य की न म ४ सा हा ॥ षष्ठं ग न मी पृ ष्ठ
॥ आ वा रु ना दि ग ज मू ढा ॥ ध म नु वा गा य वा न प ठ पं यि ना य

स्वा ल क्षा य ॥ ॐ ग ज व द ा हा त्मा स र्प य क्का प वी री पृ थ ग
न ज ध ना मी णु णि ला क्श मू लि ४ क न ध ला मू ल ल डू क
भ वा रु न णु वि वि ष्णं रु द्द मू ण का क्का ग (६) ४ ॥ क ल ण श्र
य स्वा ल क्षा य ॥ य क्क वि स र्ज न या य ॥ क ल ण क्षा य ॥ ग ल ण व
या या य क्षा य न व की ॥ वा ज न क्षा य ध र्म ग व ॥ स म
य वि य क ॥ ध र्म यून क व ना ट य ॥ ध र्म क्षा य ॥ ना ट ध र्म क

लक्ष्मण ३ दुवर्ग यिनायक लक्ष्मण ३ दुवर्ग य॥ नाट्यवक
लक्ष्मण ३ नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक
या॥ ॥ पंक्तु मरुत्यं नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक
वि ४ यिना वद्वं वन॥ च विमर्गय न्यक लक्ष्मण ३ नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक
इंगमार्ग॥ सगुणकाय॥ चपन ॥ खालका गाय॥ ॥
धन विधान प्याखन या ८० निर्य कर्म पवि पातिन सिद्धि गाय
इ विधान समाप्त ४॥ ॥ ॥ मूलक लक्ष्मण ३ नाट्यवक लक्ष्मण ३ नाट्यवक

ही कादुखान यता॥ इइ गायवखान याता॥ स्वध जया
खानवता॥ क (ग) ला ति पने खानवता॥ ॥ अष्टिया खाल
गय २२ दिला कपाल १०॥ चवद गाय खाल गय वक्रा २५
दि ८॥ अर्द्ध ३३ कपाल विनायक गव॥ अथवा सिद्ध्या खाल
ल गव॥ अथ विवृणक्ति वक्र गकि धन वृ गव॥ ॥ पूर्वादि
०० गनाना नदि गप तापया कृ ख स २२ दिला १०॥ कृ ख स वक्रा २५
दि॥ अर्द्धया अत न कृ म सिन (धन) सफरु गवक च वक्र

चक्र गदा अश्वत्थ रश्मिजवखव ॥ उद्धया चतुर्वक्त्र हंसास
 नम्रीत ॥ वक्रगकि हंसासनी पीताचतुर्वक्त्राचतुर्वक्त्र ॥ ज
 वसजाय काय खर्व क विद्रु ॥ मध्यया कुरवसनाटध्वनक
 खंससिद्धिविनायक ॥ दिगपगाय उन्नमानाटध्वनाय ॥
 अमन्दगकिपविवाहिनमकुगर्क गत्वानुपम दहहुं ।
 अश्वमीसाधनकर्तृपत्रमहासुहिनायध्वनसकलसिद्धिपदनि
 रम्भमिचन्द्रमालिभुजगणैर्विर्तकीलितमानदी ॥ १५

नाथ ॥ तिस्रह गाले नमिनादावसाने ॥ यादथासव्यमा
 नाइविगलयमुखीरुनु दाचमधीमात्सारवक्रुखवकुलय
 रुवैरुगनार्थ ॥ ॥ १ कथा उक्तगन्यागालयनिमईथनी ॥
 हजपयसवायमकुवैकीसी ॥ यिपवसन्दयनिम ॥ ॥ गानावन
 नवाय ॥ ॥ का प्रका राकुखान अखतहुजपयवानार्थथनी ॥
 दवयाजवसग ॥ भारुनीरु वृरु वलि भुजावन नवय वि
 पूनमूलविद्यावायनतासंशना ॥ अगुनिगुगुनि ॥ ताउसईथरु

माहनीरु ॥ गमनी माला ॥ या सा गथा गल माहनी यार्ग माला
 ॥ नक कायस याम रुक्ति कर्कश धन काय ॥ ॥ ८ तस
 पूजा धून काव गालन शकी शन गमक नदीयस नाध ध्व
 वपूजा ॥ गाल गमक धायन याठ पूजा याय ॥ ॥ धून कय
 ॥ पाखन संधा थयस मधुल थलाव थायन याय गाल
 गमक धं गम पूजा याय धर्ग धून काव काय ॥ पाखन ध्व प्रवण
 शकी ॥ ॥ धर्ग शन ॥ ॥ १ ॥ कित सवा धून क सिद्धि

रुग क का मर्ग काय क हाव काव माठ दूया ॥ सकल वं ॥ धन
 लिधन मर्ग व ॥ नाट ध्व वपूजा याय स्नान मृतादि मनु स्नान
 वग सिद्धि धलि वग जिन क वल वाय ॥ ऊजाम स्नान वास
 टाय नेव यव लि ऊजावन ग ससा चरु मर्ग ॥ पूजा याय ॥ ३ ॥
 अयादि यरा जर्न समर्थ ॥ पूजा धून क ॥ अथ धर्ग वासन मधु
 ल या काव गाल आवस र्वि खवस ववलि जवस गमक लिवन धं
 गम ग पंचामृतादि स्नान वग सिद्धि ऊजाम स्नान चरु मर्ग ॥

पूजायाया ॥ ईहायावमाहनीरु विधानार्थं दधू विधीनक ॥
 पिलूवयाव वापपूजा वसाग मधुल गण्डदक्षिणा ॥ पवित्राव
 पूजा ॥ वृकानदाया ॥ दवक चन्दनादि सगुणस्नान ॥ ॥ अथ गेव
 दाव गायत्र्यादिनसगर्ण चतसिधस्नानसगुणविय ॥ अथ प्या
 खनमासूपरुगिन सकल विय ॥ चरुमरुनपतालदाय ॥ सि
 खि ववलि गभर्क वंगभदाय ॥ अथ थव २ तालपगिय ॥ अथ वव
 शनदावमाहनीनगेवकी ॥ दव उध गयनादि ॥ सूयादियाख

नमागेवकी ॥ तास ॥ तालघावकी ॥ प्याखनप्रवणचालकी ॥ अथ स
 मयवियसकली ॥ चलस कुरु म ॥ अथ कुरुवने ॥ प्याखनस्येदा
 थायस ॥ लेखनमधुलयाय चतसिध द्य मर्क जाय थ
 (थं निथव २ स कुरुवने ॥ सगुणकायचपनधिय ॥ ध १ नक
 सनाटध्वपूजा ॥ पलि (गभ्य ॥ ८ ग ॥ कीलनताय ॥ यिनायखाल
 या जा ॥ दिगपतापयार्गकापठपूजा व्यापानीदाय ॥ वि
 वरुनविय ॥ यिनाय य ॥ अंकजददप ॥ द्याद्यवधचय ॥

क्रियं वलियाग ३ विय कृपाग १ नाटध्वन कृपाग १ कीलनस
। कृपाग १ धनस ४॥ कीलनयादात चंदव वलिक्रिय ॥ ॥ लि
॥ नाटध्वन पूजा ॥ कीलनस पूजा ॥ विसर्जन ॥ पीठिन ॥ मधुपस
दात श्रुति कुरुदन ॥ यंकुलिदिगस माहनीरुथाय ॥ कलशवाया ॥
महाकिता पूजा ॥ नववलि ॥ पंचगव्य साधन ॥ दिगध्वन पूजा ॥ कल
शमन ॥ धिवासन पूजा ॥ अग्नि स्थापन ॥ विधि ॥ यथाकर्मसिपी ०
सर्पवसूयनयिदाव आहुतिविय ॥ अथयिनायस्वात् दिगपगा

पा माहनीरु रुंठा ॥ भेष एवात्स लंसास्य ईग ॥ निवश कि कल
गीयाद्वन ॥ स्वस्तिकवाय गलायावती ॥ स्नानकलसन स्नानयाय
। मृत्तिकादि उधधी ॥ तालपतिदश क्रिया ॥ विनायस्वात् लयायाव
द्वन वलिसद्यसाग विय ॥ आहुतिविय ॥ माहनीरु ॥ अथ अग्नि
कुरु सद्यसाग ॥ मांसाहुति ॥ निवाहुति ॥ पूषु ॥ माहनी सद्यसाग
पूषु ॥ सिंघं गश्वादिन ज्ञाय ॥ अथ पीठि विन स्वस्तिकासनयाद्व
सावकं ॥ लेख लभभला ॥ यत्रपति मर्तुरु ताडवा नष्ट

व॥ ध्वनेदिपठपाशना॥ सँ ६७ ॥ ६७ ॥ १३ नमा वृक्षनाथाय ॥
करुणावीर्यमूर्ति उष्टा आदिनस्नानादिउपवासयाचकी ॥ वलाहव
कव॥ नाटश्चत्रपूजनयाय॥ पंचामृतनस्नानं ॥ स्नान॥ धोलिक
मल॥ चंदन सिंदूर दृष्टि यङ्गापवीत पूष्य॥ सवो पूजनं
ताल आदिनकवनकलरावकी ॥ स्नानादिपूजनं ॥ ॥
न उाश्रयादिपूष्यराजनं॥ आचार्यनपूजनं॥ गुरुनमस्कारं॥ न्या
स र्यपाणपूजनं॥ आत्मपूजनं॥ लंपनडाहापनं॥ पंश्र

वलनं॥ मालिनी पञ्चवलि॥ विवलि॥ नवात्मनं॥ ॥ पूर्व
वचुष्टवधवाचनं॥ ध्यान॥ य याञ्जलियाया॥ मूलमकुंठ
श्रयाञ्जलि॥ नवनाटकादिसर्वदवाचनं॥ त्वरीदवाचनं॥
वलिवीर्यमालका॥ कुरुगुनकरुणदयकरुणकरुणासरुक
वर्धगुंजलि॥ ॥ देवलि॥ करुणावीर्यमूर्ति श्रयाञ्जलिवीर्यक
यमन॥ ॥ लि॥ ॥ ताल आदिनपूजनं॥ उं हूं तां ती गूं वं तीं
मूर्त्य तालायनम॥ ताल॥ ॥ दमलि॥ ॥ उं हूं नदिमधुलाय

नमः॥ जवा॥ उँ हूँ महा काल मधु लायनमः॥ वाम॥ खि॥ ॐ द
 मलि॥ ॥ उँ हूँ नदिमरु कालायनमः॥ मूज॥ ॥ उँ हूँ कँ की
 गलायनमः॥ उँ हूँ कासधवलमूरुय २॥ ववलि॥ ॥ उँ हूँ कर
 लि सिहात्मननमः॥ उँ हूँ राँगी हँ रलात्मन सिधनादायनमः॥ घं
 ग॥ ॥ उँ हूँ हँ कँ कालमूरुय निर्जनपद्यायनमः॥ ग॥ ॥
 आननवलि॥ ॥ आवारुनादिवलिनेवश॥ ॥ गगाभूतिपू
 जनी॥ उँ हूँ व विष्णु वगालधरात्मने २॥ गालधक॥ ॥ उँ हूँ नदि

मूरुयः जवलाखिधक॥ उँ हूँ वँ मू (म) मूला कालमूरुय
 मधुवादिननमः॥ खवलाखिधक॥ ॥ उँ हूँ नँ दिकुशायम
 नूजस वायधरात्मननमः॥ मूजधक॥ ॥ उँ हूँ कँ किमवा
 यकागल्यध म॥ ववलिधक॥ ॥ उँ हूँ गँ गधुवयि सि
 हात्मनकरुलीधरात्मने २॥ व॥ ॥ उँ हूँ उँ हूँ मूवाय २॥ उँ हूँ
 नँ नात्रदाय २॥ उँ हूँ हाहाय २॥ उँ हूँ यादुगायनजवलाखव
 लाचर्च॥ ॥ उँ हूँ कँ कालात्मन निर्जनपद्यवायनमः॥ जव
 ग॥ काल॥ उँ हूँ मँ मूलात्मन निर्जनपद्यवायनमः॥ खवग

धगात्मननमः॥ खवलाखिधक॥

काव॥ ॥ नाट्यध्वनमूलवर्णगनसंपूज्य॥ अवाहनादिवलि
 नेवय॥ संप्रदायपूजनविधि॥ ॥ यममनुष्यजापयथागकि
 उपपूज्यरितकीर्तिलिपुगयागी॥ मूलनजाप॥ धूपदीपपतिष्टा॥ तु
 निष्कपूयाय॥ स्वस्तिपूजन॥ पशुभोधन॥ पशुगणार्घ्यं॥ पुनः ४ कृप
 वटकृगणपतिनृत्यध्वनगाय॥ महामाया॥ श्रीसुखला॥ क्रमामुनि॥
 ज्ञानगन्ध॥ दि॥ परिवारपूजन॥ यावकथादिवाकनकाय॥ सगुण
 देवर्षी॥ एकानकगिदवागवर्दि॥ ॥ तालधवादिगुरिषेक॥ च

नदनसिद्धवस्त्रान् लागावर्दि॥ कनूषवीयर्षीद्वजापसकाया
 स्त्रानवियक्ष्वकमगति॥ कनूष आचर्यिषद्वगर्षिषद॥ ताल
 धवादिसमूयवीयक॥ सकलेद॥ पाञ्चचकीर्ण लक्ष्मिदिनका
 यलाहागसचगनस्त्रस्त्रिकवायाव॥ मूर्त्तिपूजनमनुष्य॥ ववलि
 धीम॥ ग॥ क॥ ध्वनद्वजायस्त्रमनुष्य॥ पशुमधुसमर्पणं॥ नम
 सवलि विसर्जनं॥ ॥ कृत्तयलसगतकमथीर्षीनानमगुर्षी॥ लस

धूपवा वरुथंठरु॥ ॐ सकिलनस आदिपंर्यंठाव॥ लेखमठु
 (थलावपटवास लकपाचने धविवाखानगे धूनि मर्त धू
 पदरुगे॥ लेखमठु ल(थलावक वीयर्कमाने॥ रुकवीयिवर्क
 ने॥ रुकवीक्यातंरुशुनडा मनुखाननजापयाठावकुचके॥ क
 नूठावीयर्कयायममनुठाजापयाठावनाटध्वसकनकीरुखा
 नवा(थयाजापखानवानकुचके॥ रुकवीयके॥ कनूठाभागकाय
 के॥ मेरुलक॥ समयचपनेधीयके कनूठाऊनठाव॥ ॐ निकथ

ठुकनवया कनूठाकाय विधि॥ ॥ ॐ रुममु॥ ॥ ॐ नमः
 श्रीनाटध्वनाय नृत्यलक्ष्मी सहिगाय२॥ ॥ ॐ अंकावपयं दत्वा
 विष्णुवसवसिद्धिदं प्रदायति नमो॥ कायं गृहं गलमनुनायकी॥ ॐ
 गलत्रसदवानामयं मनु ४ प्रकाशक ४॥ ॐ अं अं अं विष्णुवसवसि
 द्धि प्रदाय नमः॥ ॐ गलत्रस ४॥ १ ॥ ॐ रुंकावमायं दत्वा प्र
 मथ धिपगयपदं॥ मां नृगुग्ममीनमाका हास्य मनुयमीवित
 ४॥ ॐ रुं रुं रुं प्रथमथ धिपगय मां नृ २ ॐ नमः॥ हास्यत्रस॥ २ ॥

[illegible]

यनमानावीरुत्सामन्त्र ००॥ विना ४॥ ॐ हूं हूं सर्वविघ्नविघ्नाना
यचक्षुःपाचसर्वकामप्रदाय हूं गृध्राय मूर्ख्यमहाकालाय
नमः ४॥ वीरुत्सवस ॥ ३॥ ॐ हूं गणपतये पुतये विष्टताय च ॥ हूं ग
ददयाय पदं कालत्रयि ॥ ०॥ काव्युगले चान्नमन्त्र
वरुणानक ॥ ॐ नमो हूं गणपतये हूं गददयाय सकलत्र
यि ॥ ००॥ ह्यानक ॥ ३॥ नमो हूं गवरो वृद्धाय तगाको ॥ धधेना
यचानमो ॥ अतिपतंगाय सिद्धि वृद्धाय ॥ अक्षयति सिद्धिदहि

धमगतिमधुसूदनस्यात्मजन ॥ सीतलहा नृवद्विउ धी
 अनयनलित्तिसामय ॥ ७८ ॥ उनमावृत्तेश्वराय ॥ वाधा
 यावन आदिनकनृषकायविधि ॥ अथवा ॥ नमनिवगुतिवा
 वविवाव दृष्टयतिवावथरुव कायसदिवसनक्षत्रलाचके
 माल ॥ कथकूकनृषपाय कावषपायशकोठ उराआदि
 न खतिनमाठकूय ० लसियाचकाव वमुरुलाव कथकूक
 वादिनकमरावडयासमाल ॥ ॥ वावानलिमाठकूयका

व. पूजाश्चाय. मवकूतूषपायनामशुयकंशुभव॥ वसपंक
कनूषपाययाध्वंतिचवसध्वं१खठिक१लूँडाहापध्वपंचनल
डाहाकूत१वासन१घाशनखानउ४श्रुदगमला१धूपवास
ध्वंति॥ ॥कानध१यगारुसध्वं१घातल२१श्रुदग१खठिक
१गुंठुलि॥ ॥मूलपाययापंचोपहानपूजा॥जा१समरुं॥ ॥
भायन१रिडिडा१कानधपाय१गुनूतनपूजायाय (थं॥ध्यानध्व
दुनुनैकममनूषपायउरिलि॥ ॥धनलिविधि(थंरुपा॥ ॥

यसंकरुषागकि सहितायनमः॥ ॐ हूँ वृषभमहो नवायवेवाङ्ग
गकि सहिताय नृवगव २ स्वाहा॥ ॥ मन्त्रजाप॥ या हाव पाव धि
यकावध्वानदवस्के गय काय जीय काव पा उच्यते॥ ॥
६ पाण्डको र्क पुति जापयाय माल॥ ॥ कनूषया काव धरुया
नवमपूजा॥ कनूषवयकया काव धकटवावादि॥ अर्घ्या पलैस्व
नहाय रुट्॥ जाँ हदि॥ वृत्त॥ ॥ न्यासया के माल॥ ॥ ॐ
न॥ पंथादह व प्रवाति जं ह ४ ग दास्व गरीष ६ वृषधानी॥ का

वाधियेव ४ कथिगा कवीन्द्रे ४ ग्या न का सो गय लय जत्मा॥ ॥
जं ज ग्या ग्या ग्या न क वृष नृत्तेश्व वायु डं द्री ग्या न क ग कि स
हि वृ वृ गाय नृवगव २ स्वाहा॥ ॐ नमो हूँ गय गय प्रगय
विष्ट गाय रुद्र दय सकल वृषि ६ स्वाहा॥ ॐ नमो वृदाय र
गवर्ग काधेश्व वायनमो हूँ गिप र्ग गय सिद्धि वृदा क्कापयानि
सिद्धि द हि स्वाहा॥ मूल॥ ॐ हूँ काध वृष नृत्तेश्व वायु डं ड॥ १०८॥
ऊपस्वानर्ग काव ध पायया॥ धनलि मङ्गा गा र्थ पूजा जाप स्त्री

य तर्पणदवर्क वृकनक्षत्रय ॥ ॥ सकलसूचननादिवि
 या ॥ ॥ स्नान ॥ मूलमनु पठ पावस्नानकायाववियञ्चुचकमगनि
 ॥ ॥ जंज दंर डंरुं कनूषा नृलक्ष्मि नृगक २ दू डं सु रे स्वा
 हा ॥ अगक जगगानाथ कनूषा कनूषा नृलक्ष्मि सादनसकल
 मोरुयत्यवमेश्वर ॥ ॥ जपस्नानथव २ स नकावपाण
 या दव २ धूपक धवावगुवृस्यन मगवावर्षावामालिनीवापन
 पावसर्नानामकुसुम अत्राक्षदयवला नकावाचर्क रंगसा ना

डायानिर्कुनथायस दवनिर्णव (थल गयावमधुलयादा
 वधन कनूषा पाणवाधुलादि मधुलसग ॥ ॥ लखनमधुल
 (थलाव कवास्व ३ सालावगुजलि ३ ॥ जप ॥ अग १ ॥ मगवा
 ज विद्याव पाखनया कमथं न्यासया दाव मालका कनूषा म
 यन (अधनयाय कनूषा वियर्क धनीलि जपल पावश्रुदगवा
 रुलकायाव जपनय कनूषा मकुषा १०८ ॥ निवस ददय
 स १०८ धूपलय गाउलय कलखन ॥ ॥ जापस्नाननञ्चका

व. रासाक्षा चकाव कनूदागकायक. मेहा लकाव पाखन
 इयक गयमरीव समयविय ॥ पाखन ति कनूदाग वडाव ज
 पयक मनुसा गुयाडाव नात्यध्वन समरी वियक वछाय स्वा
 नन ऊचक कनूदाग यिव ॥ ॐ न कनूदा विधि ४ ॥
 ॥ सैग ल सैपू ॥ ॥

मकरा पंके चरन

माधजाक थुका ययामू ल सिद्धि विधि वाय ॥ सिद्धि दूग वू द
 ॥ दू ययाडाव सान ठु चिव दून नित्य कं ड प वा स या चक ॥ नित्य स
 वा निधून क ॥ ॐ न काना ठ ध्वन पूजा ॥ जय श्री गधून काव मर्ग क
 यक ग ॥ वाचालिहा लडाव सक लं माल दूयक व छाय ॥ धन लि
 दन म ग व ॥ नाट ध्वन पूजा ॥ स्नान पी वा मृग ॥ मनु स्नान चन
 सिधु जुजम स्नान दृष्टि धवि वडि क वल ग ॥ पातासन वायाव
 न व दू ऊ जावन से साच हू मं र ग ॥ पातासन वायाव ताल सि

वदन्ति गायन ध्वज वायाव पंचामृगादिस्नानवर्गसिद्धिज्जम
स्नानवद्वर्मिष्ठत ॥ य ॥ गालपतिद्वसविनीत ॥ ॥ यथावि
धिर्न संप्रदायपूजा मुक्तिपूजा वंगपूजा दिनजपकाष्ठतांनाठ
ध्वजपूजायाय ॥ ॥ धनलिच्छविर्नपल्लुदयक ॥ ॥ थईहायाव
॥ न्यासयावा ॥ माहानीरुर्गारुधर्कगात्रयथ वीधट् साय
द्वैश्रवर्ग ० न्याय द्वैश्रवर्ग ० धियाय ॥ कूरवलिपाग ३२ स्वात

पागज उंजावन धननदायकी वायवाक्ष ईशदाव ह्ताउठ
 ले॥ समलधकनग ॥ ॥ उंज्यादिपुष्पराजनयाव काव आवा
 यनिकायाव॥ मारुनी रुग रासेन की मो ४ युं धनवीजवायावमा
 रुनीरु ॥ उंज्यादिपुष्पादि ॥ गुननमस्कारन्यासाद्ययापपूजा॥ आ
 त्मपूजा॥ मालिनीन्य (०७) ॥ पञ्चवलि ४॥ नवात्मागुप्तसुलधूनकी॥
 वंज उंहुं कुं श्री सर्वजनकारुणाधीपापू॥ वंज उंहुं कुं श्री सर्वज
 नमारुनाधीपापू॥ वंज उंहुं कुं श्री सर्वजनकारुणाधीपा

पू॥ जंजं डं डं डं श्रीसर्वजस्रुहनीयापाप॥ डं डं डं श्रीसर्वजन
आकर्षणी श्रीपाप॥ जंजं डं डं डं श्रीसर्व जनक्याक
नीयापाप॥ हेनवाश्क ८॥ हनुका दि॥ वक्राध्वादि॥ वट
दूती॥ यशकिनी॥ ॥ मूलस्नानगंधिनक॥ गतस्त्रिपुत्रसूदय
चर्न॥ न्यास ४॥ अर्घ्यापयुजा॥ अक्षयपूजा॥ गत ४ पूजन॥ कीर्त्तनी
गंष्टापतिनाथवल्लभाश्वादिगंधीपाप॥ कीर्त्तनीवदूकनाथवल्लभा
श्वासहिगंधीपाप॥ कीर्त्तनीकामदेवनेत्यम्॥ श्रीपाप॥ कीर्त्तनीवृ
क्ष

वसन्तप्रीत्यम्बाश्रीपाप॥ कीर्त्तनीदरुलोपाप॥ ॥ कीर्त्तनीपरम
थश्रीपाप॥ कीर्त्तनीपरमागकिश्रीपाप॥ कीर्त्तनीकूलेश्वराने
दनाथश्री ॥ कीर्त्तनीपुकादवीश्रीपाप॥ कीर्त्तनीकोलेश्वरा
नेदनाथश्रीपाप॥ कीर्त्तनीवा धनीश्रीपाप॥ कीर्त्तनीरागनेदना
थश्रीपाप॥ कीर्त्तनीकलिगनेदनाथश्रीपाप॥ कीर्त्तनीसिंहनेदनाथ
श्रीपाप॥ कीर्त्तनीशामानेदनाथश्रीपाप॥ कीर्त्तनीसरुजानेदनाथश्री
पाप॥ कीर्त्तनीविश्वनेदनाथश्रीपाप॥ कीर्त्तनीविमलानेदनाथश्री॥

ॐ श्री मदनार्दननाथश्री ॥ ॐ श्री गगनार्दननाथश्री ॥ ॐ श्री
 चन्दार्दननाथश्री ॥ ॐ श्री प्रकाशविमर्शश्री गुरुप्रसादश्री पापू ॥ ॥
 ॐ श्री श्रुतिमासिद्धिश्री पापू ॥ ॐ श्री लघिमासिद्धिश्री ॥ ॐ श्री म
 हिमासिद्धिश्री ॥ ॐ श्री प्रकाशमासिद्धिश्री ॥ ॐ श्री वनितार्यासि
 द्धिश्री ॥ ॐ श्री सर्ववसितार्यासिद्धिश्री ॥ ॐ श्री उक्तिसिद्धिश्री ॥ ॐ
 श्री ॐ सासिद्धिश्री ॥ ॐ श्री पापसिद्धिश्री ॥ ॥ ॐ श्री श्रवण
 शीश्री पापू ॥ ॐ श्री ॐ मारुथ श्री ॥ ॐ श्री उक्तीमानीश्री ॥ ॐ

[illegible]

नीमडादवीधी॥ जीधी श्रीवाजमूडादवीधी॥ मूडादवीधी॥
जीधीनं ॥ नमूडादवीधीपायू॥ जीधी श्रीविखलुमूडादवीधी
॥ ॥ जंकीसी४ विपूनादवीधीपायू॥ ॥ पथम॥ ॥ जीधीमू
कामाकर्षणी नित्याकलादवीधीपायू॥ जीधी श्रीवृद्धाकर्षणी नि
त्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ गुरुकावाकर्षणी नित्याकलादवी
धी॥ जीधी ॐ गद्याकर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ सग

कर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ त्रुपाकर्षणी नित्याकला
दवीधी॥ जीधी ॐ त्रसाकर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ गन्धा
कर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ विनाकर्षणी नित्याकलादवी
धी॥ जीधी ॐ धेयाकर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ सुखाकर्ष
णी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ नामाकर्षणी नित्याकलादवीधी॥
जीधी ॐ वाजाकर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ आमाकर्षणी
नित्याकलादवीधी॥ जीधी ॐ गृमगाकर्षणी नित्याकलादवीधी॥ जी

ॐ श्री ४ गरी वा कर्षण कलादवीथा ॥ ॥ द्वितीय ॥ ॥ ॐ श्री
कं श्री नमो कृष्णमादवीथापापू ॥ ॐ श्री गमखलादवीथा ॥ ॐ श्री
ॐ श्री नमो मदननादवीथा ॥ ॐ श्री गं श्री नमो मदननादवीथा ॥ ॐ श्री
पं श्री नमो नखादवीथा ॥ ॐ श्री यं श्री नमो गवगिनीदवीथा ॥ ॐ श्री ॥ श्री न
म कलादवीथा ॥ ॐ श्री ॐ १३ श्री नमो मालिनीदवी ॥ ॐ श्रीपापू ॥ ॥ ८
गीय ॥ ॥ ॐ श्री सर्वसंसारनागकिंथापापू ॥ ॐ श्री सर्वविद्यावनि
गकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वकिंथागकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वज्ञादिनीगकिंथा

॥ ॐ श्री सर्वसंसारनागकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वसंसारनागकिंथा ॥ ॐ श्री
सर्वजंरनागकिंथा ॥ ॐ श्री सर्ववगद्विषागकिंथा ॥ ॐ श्री सर्व
जिनीगकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वान्मादिनीगकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वगिपविपू
नागकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वार्थसाधकीगकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वमनुमयीगकि
था ॥ ॐ श्री सर्वद्वंद्वकरीगकिंथा ॥ ॐ श्री सर्वविगकरीमूर्धादग
य ॥ ॥ चतुर्थ ॥ ॥ ॐ श्री सर्वसिद्धिदादवीथा ॥ ॐ श्री सर्वसंयु
दादवीथा ॥ ॐ श्री सर्वप्रियकरीदवीथा ॥ ॐ श्री सर्वमंगलकादिना

संहं कं श्री कोलिनीवा (यवता श्री ॥ खवनी मूद्रा ॥ ॥ सफमा ॥ ॥
 दीधीयां बालावां भंडां दीक्षीवुं स ४ जां जं रुनह्य ४ कामध्वनवा (६
 ह्य ४ धीपायू ॥ दीधीयां दीक्षीवुं स ४ यां बालावां भंडां जं रुनह्य ४ का
 मध्वनीवा (६ ह्य धीपायू ॥ दीधीयां बालावां भंडां दीक्षीवुं स ४ धं भा
 रुनाय कामध्वनवा पायू ॥ दीधीयां बालावां भंडां दीक्षीवुं स ४ श्रव
 णी करध्वय कामध्वनवा धीपायू ॥ दीधीयां दीक्षीवुं स ४ श्रवण
 करध्वय कामध्वनी पाण्य धीपायू ॥ दीधीयां बालावां भंडां दीक्षी

वुं स ४ कां रुनाय कामध्वनवा कुभय धीपां दीधीयां दीक्षीवुं स ४ यां
 बालावां भंडां कां रुनाय कामध्वनवा कुभय धीपायू ॥ वीज मूद्रा दध्व
 ॥ गुरुम ॥ ॥ वागुवर्गजलि ३ ॥ जं की सो ४ की वा रुवजु निवक
 कामगियलिय मेणी गनाथामिक कामध्वनी दवी नूद्रा लग
 कि धीपायू ॥ ॥ देवलि ४ ॥ ॥ कामना रुगुजलि ४ ॥ ३ ॥ जं की
 सो ४ श्री कामना रुगुसूर्य चक जालाध्वनपी (० प्रष्टी गनाथामि
 कव रुगु जध्वनी दवी विष्णु लग कि धीपायू ॥ ॥ देवलि ४ ॥ ॥

जं क्री सो ४ मू ग कि वी ज सो म च क पू लु नि रि ग क्ष व ड ठी ग ना थ
 मि क रु ग ५ मालिनी द वी व क्षा त म ग कि धी पा पू ॥ ॐ दे व लि ४ ॥
 स्त्र ५ स्त्र ४ ४ वि पू न रु वी धी पा पू ॥ ॐ दे व लि ४ ॥ ॥ न व म च क ॥
 ॥ ॥ वि पू न रु द वी गं ज लि ४ ॥ जं क्री सो ४ क्री मू मू लु नी य वी ज
 व क्ष च क शान पी ० च यानि ना थ मि क ५ ५ ५ धी वि पू न रु
 द वी द वी प न व क्षा त म ग धी पा पू ॥ ३ ॥ ॐ दे व लि ४ ॥ यानि मू

या विखलुमूखांदर्शयता ॥ नूतिनवमचर्क ॥ ॥ तनावलि ॥
 वदुकवलि ॥ ॥ श्रीधौवांवीवूं ॥ नक्षत्रिदवायुवदू कपिलजगता
 वरासूत्रपिनयं कालामुखगंधपूषाकृतालिपिनिगवलि म
 मसर्वविघ्नानाशय २ ॥ ॥ यागिनी ॥ ॥ श्रीधौयांस
 र्वयागिनी वलिगुक्त २ ॥ ॥ वक्राशुतावादिविगगधनलहृगलेनि
 कलेवापागालेवा लेवासविनयवनयाय्यकृष्णितावा ॥ ॥

[illegible]

हंशुकादि॥ प्रयागदि॥ समयवलि॥ अऊनादिवलि॥ वनी
लि॥ कडसि॥ महावलि॥ ॥ धूपदीपनैवद्यपतिश्च॥ अ० ४॥ वि
पुनमूलमकुक्षध्वज १०८॥ यथागकिस्तुप॥ धनमारुनी ध
नविधि ४॥ ॥ धनलिमारुनीरुयाथयनपिहावयावना ८ धन
सदनैवापयूज॥ पण्डितर्पण॥ मण्डलयादावमहामायापण्डित॥
यथागकिस्तुप॥ ॥ मारुनीसैपण्डितर्पणदिवविसर्जन

गांधूनकावस्त्रान नकायावपिहावय॥ ॥दवदक्षिष्णन
पगर्क॥ पूजावाविस्सुंदक्षिष्ण सुर्षणी॥ वाकनक्षय॥ दवस्स
वेदनादिसुष्ठुलकाय॥ दवाणावदि धनलिप्पाखनमासूयय
परुगिनस्रुक्तिकासनयाचकीवल्लिच्छशुद्धवगा कंडालैखडा
ननिर्मक्तनयायश्चुमकुल॥ ३ ॥ अर्घपापलैखनहाय॥ ॥
ददयादिष्ठुंगनमालसुजपत्रपसूयादि॥ ॥ कवचनक

वालेखर्वनगाठनी॥ ॥ पूजायायमनु४॥ उं हूं हूं महानृ
त्येध्वनरुनवायश्चुक्ताकिदेवदक्षपापनाय२ हूं हूं ॥ ॥
गंयणीनमालसुजपत्रप॥ उं हूं सहस्रवाहवविभरुगाधुवा
यधीमरु॥ गन्धानृत्य४ प्रचादया७॥ वसुक्ताय॥ चगस्त्रानविय
॥ गावधनादिप्पाखनमासूयादि॥ स्वच्छिगनगचकचगकन
॥ गावधनादिनडरागाक्षायपूजनमकुल॥ गालपगिनगच
के॥ दक्षिष्णकायाव॥ ॥ माहनीक्षायमनुक्तागर्कगर्षहाम

लवकनन ॥ वल्लभ नटाव माहनी नगे चके ॥ देव, धर्म, गान
 धनादि, सुखादि ॥ दक्षिण कायाव ॥ ॥ देवज्ञाया ॥ नदिपु
 य, गच्छं नपि न ॥ सुन्यमहालक ॥ पवण कं प्याखनश्रयक ॥
 ॥ ॥ समयविय ॥ आस ॥ वलिविसर्जन ॥ छंदनं प्या ॥
 धायस ॥ लेखमधुलयाय ॥ नवलवगसिंधुज्जमस्वाननजा
 सुगुणकाय ॥ गालपतिद्याद्यनकागाय ॥ पद्ममहस्यं नाट्येन
 स्केप्याखनश्रयक ॥ ॥ धर्ममाथजाप्याखनेयामूलसिद्धिवि
 × वपनधिय × ४

वि० ॥ ॥ श्रियाऽमु ॥ समस्तन ००० नष्टज्जावारमास्यं शुक्लप
 उकादश्यानिधौ ॥ गनेधनवासव
 धनकृद् दणमी ॥ शुक्लवानधकृद् कल्पिनीया, पूनावा
 धययाहगया, गववाकड्यावचूसायं छदिनसनाशुह ॥



























